Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

अल्लाह तआला का आदेश

فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ○

(सूरः बकरः आयत:201)

अनुवाद : और लोगों में से कोई ऐसा भी है जो कहता है, "ऐ हमारे रब! हमें दुनिया ही में दे दे।" और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 34
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

26 सफ़र, 1446-47 हिज्री कमरी, 21 ज़हूर1404 हिज्री शम्सी, 21 अगस्त 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किसी की मौजूदगी में उसकी तारीफ नापसंद फ़रमाई है।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकरा ने अपने पिता से रिवायत की कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास किसी शख़्स ने एक आदमी की तारीफ की, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "वाए तुझ पर! तूने अपने साथी की गर्दन काट डाली, तूने अपने साथी की गर्दन काट डाली।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह बात कई बार दोहराई। फिर इरशाद फ़रमाया: "तुम में से जो कोई अपने भाई की तारीफ करना ही चाहे, तो उसे यूँ कहना चाहिए। मैं फलाँ आदमी को ऐसा समझता हूँ, हालाँकि अल्लाह ही उसके बारे में पूरी तरह जानता है। मैं किसी को अल्लाह के सामने बे-ऐब नहीं ठहरा सकता। मैं उसे ऐसा ही समझता हूँ।'" बशर्ते कि वह सचमुच उसे वैसा ही जानता हो।

तशरीह: हज़रत सैय्यद ज़ैनुल आबिदीन वली अल्लाह शाह साहब इस हदीस की व्याख्या में फरमाते हैं: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किसी के सामने उसकी तारीफ करने से मना फ़रमाया है। यह न सिर्फ बेजगह है, बल्कि जिसकी तारीफ की जा रही है, उसे घमंड में डाल सकती है। साथ ही, जरूरी हो तो भी तारीफ के लफ्ज़ों में एहतियात बरतनी चाहिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस इरशाद "फ़ल-यक़ुल अहसिबु फुलाना वल्लाहु हसीबुहु..." से यही सीख मिलती है।

★ ★ ★

जो मनुष्य लाभकारी और अपने धर्म का सेवक होता है, अल्लाह तआला स्वयं उसकी आयु और स्वास्थ्य में वृद्धि कर देता है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

जीवन की अत्यधिक इच्छा पापों की जड़ है। जीवन की अधिक चाह अक्सर अनेक पापों और कमज़ोरियों का मूल कारण बन जाती है। हमारे मित्रों को चाहिए कि सच्चे स्वामी की इच्छा में अपना बहुमूल्य समय बिताने का सदैव प्रयास करें। अंततः यही सार है, अन्यथा आज मर जाने और पचास वर्ष बाद जाने में क्या अंतर है? आज जो चंद्रमा और सूर्य है, वही उस दिन भी होगा। जो व्यक्ति उपयोगी और अपने धर्म का सेवक होता है, खुदा तआला स्वयं उसकी आयु और स्वास्थ्य में वृद्धि कर देता है और दुष्ट लोगों की परवाह नहीं करता। अतः आप सभी कार्य खुदा तआला को समर्पित करके करें, स्वयं परमात्मा आपकी रक्षा करेगा।

तीस वर्ष से अधिक समय बीत चुका है जब खुदा तआला ने मुझे स्पष्ट शब्दों में कहा था कि तुम्हारी आयु अस्सी वर्ष या दो-चार वर्ष कम-ज्यादा होगी। इसमें यह रहस्य भी है कि जो कार्य मुझे सौंपा गया है, उसे पूरा करने के लिए इतना समय निर्धारित किया गया है। इसलिए मुझे अपनी बीमारी में कभी मृत्यु का दुःख नहीं हुआ।

मुझे अच्छी तरह याद है कि जिन वृक्षों के नीचे मैं छह-सात वर्ष की आयु में खेला करता था, आज भी कुछ वृक्ष उसी प्रकार हरे-भरे और सुशोभित खड़े हैं, किंतु मैं अपनी स्थिति को बिल्कुल भिन्न पाता हूँ। तुम भी इसकी कल्पना कर सकते हो।

समकालीन लोगों की आलोचना को अपने सुधार का साधन समझो। इसमें ही आत्म-शुद्धि निहित है। जब ये नहीं होंगे तो खुदा तआला की सेवा और सम्माननीय व्यक्तियों को उपहार क्या होगा? आप बीमारी की चिंता करते हैं। आपके पूर्वज भाई अर्थात सहाबा तो प्राण अर्पण करने की प्रतिज्ञा करते थे और सदैव प्रतीक्षा करते रहते थे कि कब वह समय आएगा जब वे अपने सच्चे स्वामी के मार्ग में बलिदान हो सकें। संक्षेप में, हर स्थिति में चाहे स्वास्थ्य हो या रोग यदि आप खुदा तआला से अपना संबंध सही रखेंगे तो सभी कार्य अच्छे हो जाएँगे।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 82, संस्करण 2018, कादियान)

शेष पृष्ठ 12 पर

प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ का पाबंद हो। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ों को समय पर अदा करे। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ बाजमाअत (सामूहिक रूप से) अदा करे। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ में एकाग्रता पैदा करे और इतनी गहरी एकाग्रता प्राप्त करे कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन के अनुसार या तो वह अल्लाह तआला को देख रहा हो, या अपने हृदय में यह विश्वास रखता हो कि अल्लाह तआला उसे देख रहा है।

सयय्दना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल् मौमिनून आयत 10 "वल्लज़ीना हुम अला सलवातिहिम युहाफिज़ून" की तफसीर में फरमाते हैं: "ईमान का छठा दर्जा यह है कि नवाफिल (सुन्नत) पढ़े जाएं। यह नवाफिल पढ़ने वाला मानो अल्लाह तआला के सामने यह प्रकट करता है कि मैंने फरायज़ (अनिवार्य इबादत) तो अदा कर दी है, परंतु इन फरायज़ से मेरी तृप्ति नहीं हुई। वह कहता है - हे अल्लाह! मैं चाहता हूं कि इन फरायज़ के समय के अतिरिक्त भी मैं तेरे दरबार में हाजिर होता रहूं। जैसे कई लोग जब किसी बड़े व्यक्ति से मिलने जाते हैं तो निर्धारित समय बीत जाने पर कहते हैं - दो मिनट और दीजिए। वे इन अतिरिक्त दो मिनटों में आनंद का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार एक मोमिन जब फरायज़ की अदायगी के बाद नवाफिल पढ़ता है तो वह अल्लाह तआला से कहता है कि अब मैं अपनी ओर से कुछ अतिरिक्त समय हाजिर होना चाहता हूं।"

"ईमान का सातवां दर्जा यह है कि मनुष्य न केवल पांचों नमाज़ें और नवाफिल अदा करे बल्कि रात्रि में तहज्जुद की नमाज़ भी पढ़े। ये वे सात दर्जे हैं जिनसे नमाज़ पूर्ण होती है। और इन दर्जों को प्राप्त करने वाले वे लोग होते हैं जिनके बारे में हदीस में आता है कि अल्लाह तआला रात्रि के समय अर्श से उतरता है और उसके फरिश्ते पुकारते हैं - हे मेरे बन्दो! अल्लाह तआला तुमसे मिलने आया है। उठो और उससे मिल लो।"

"अतः इन सातों दर्जों को पूरा करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ का पाबंद हो। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ों को समय पर अदा करे। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ बाजमाअत अदा करे। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ को समझ-बूझकर और उसका अनुवाद सीखकर अदा करे। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह फर्ज़ नमाज़ों के अतिरिक्त रात और दिन के समय में नवाफिल भी पढ़े। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नमाज़ में एकाग्रता पैदा करे और इतनी गहरी एकाग्रता प्राप्त करे कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन के अनुसार या तो वह अल्लाह तआला को देख

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान बहुत ऊँची, उत्कृष्ट और सर्वोच्च है... आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सीमाओं की स्थापना के लिए चट्टान की तरह मजबूत थे और किसी की कोई परवाह नहीं करते थे। हालाँकि, क्षमा और दया के समय रेशम की तरह कोमल और नरम थे। आपको किसी प्रकार की कोई व्याकुलता या बेचैनी नहीं होती थी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है कि जिस अवसर पर मक्का के पूर्व निवासियों के अत्याचारों की याद आपको प्रतिशोध लेने के लिए उकसा सकती थी, आपने अपनी सेना को किसी भी प्रकार के रक्तपात से रोका और विनम्रता व अल्लाह तआला के प्रति कृतज्ञता का पूर्ण रूप से प्रदर्शन किया।

(आर्थर गिलमैन)

मक्का की विजय के माध्यम से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पैगंबरी के अपने दावे की सच्चाई को सिद्ध कर दिया। यह विजय बिना किसी रक्तपात के प्राप्त हुई और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शांतिपूर्ण नीति सफल रही। कुछ ही वर्षों में मक्का में मूर्तिपूजा का अंत हो गया और इकरिमा व सुहैल जैसे कट्टर विरोधी ईमानदार व उत्साही मुसलमान बन गए।

(कारेन आर्मस्ट्रांग)

अगले जुमा से इन-शा-अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा सालाना भी शुरू हो रहा है। इसके लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला अपने फज़्लों से जलसे को बरकत वाला बनाए और हर प्रोग्राम को अपने फज़्लों से नवाजता रहे।

गजवा-ए-फतह मक्का के संदर्भ में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज्ञानवर्धक वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 जुलाई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज भी मक्का की विजय की घटनाओं की और अधिक विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करूंगा। पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मक्का में ठहरने की अवधि के बारे में विवरण इस प्रकार है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मक्का पहुंचने और मक्का की विजय के बाद वहां कुछ दिनों तक रुके थे, लेकिन ठहरने की अवधि के बारे में विद्वानों में मतभेद है। बुखारी में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में उन्नीस दिन ठहरे। आप दो रकअत नमाज़ पढ़ते थे यानी क़स्र करते थे। कुछ रिवायतों में अठारह या सत्रह और पंद्रह दिनों का भी उल्लेख मिलता है। इमाम इब्ने हजर ने उन्नीस दिन वाली रिवायत को प्रमुख माना है क्योंकि अधिकांश रिवायतों में उन्नीस दिन का जिक्र है और बाकी रिवायतों को इस तरह समन्वित किया गया है कि उन्नीस दिन वाली रिवायत में मक्का में प्रवेश करने और वहां से रवाना होने के दिन भी शामिल हैं। जिन्होंने सत्रह दिन बताए हैं उन्होंने आने-जाने के दोनों दिन शामिल नहीं किए। जिन रावियों ने अठारह दिन की रिवायत बयान की है उन्होंने इनमें से कोई एक दिन गिना है, जबकि पंद्रह दिन वाली रिवायत के रावियों ने सत्रह दिन वाली रिवायत को ध्यान में रखकर लिखा है कि यही मूल है और फिर इसमें से प्रवेश और प्रस्थान के दिन निकालकर पंद्रह दिन का उल्लेख किया है।

(सबुलुल हिदाया, जिल्द 5, पृष्ठ 261, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बेरूत)

(फतहुल बारी, जिल्द 2, पृष्ठ 715, क़दीमी किताब खाना, कराची)

कुछ पश्चिमी विद्वानों ने भी पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्का विजय के बारे में अपनी पुस्तकों में लिखा है। विलियम मुइर एक प्रसिद्ध पश्चिमी विद्वान था जिसका संबंध स्कॉटलैंड से था। मक्का की विजय का वर्णन करते हुए उसने अपनी पुस्तक 'द लाइफ ऑफ मुहम्मद' में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श चरित्र का उल्लेख करते हुए लिखा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अतीत के सभी पुराने अपराधों को क्षमा कर देना, यानी लोगों के सभी अपराधों को माफ कर देना और उनकी सभी छोटी-बड़ी पीड़ाओं को भुला देना वास्तव में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपने हित में था। यह लिखने के बाद वह मजबूर होकर सच्चाई को स्वीकार भी करता है। वह कहता है कि इसके लिए एक बड़े और कोमल हृदय की आवश्यकता होती है। इसका लाभ यह हुआ कि आपके पैतृक शहर के सभी लोग आपसे जुड़ने लगे और आपके उद्देश्य को पूरी खुशी और स्पष्ट श्रद्धा के साथ अपना लिया। कुछ ही हफ्तों बाद हम देखते हैं कि उनमें से दो हजार लोग आपके पक्ष में खड़े होकर बड़ी वफादारी के साथ युद्ध कर रहे हैं।

(The Life of Mahomet by Sir William Muir, पृष्ठ 425-426, अध्याय 24, लंदन स्मिथ, एल्डर एंड कंपनी, 15 वाटरलू प्लेस, 1878)

इसी प्रकार विलियम मॉन्टगोमरी वॉट ने भी लिखा है। यह भी एक स्कॉटिश पश्चिमी विद्वान था जिसने इस्लाम और पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खिलाफ अपनी पुस्तकों में बहुत कठोर बातें की हैं, लेकिन उसकी एक पुस्तक 'मुहम्मद अट मदीना' है। इसमें वह लिखता है (मैं इसका अनुवाद पढ़ता हूं, पहले भी मैंने अनुवाद ही पढ़ा था) कि मक्का के नेताओं को मुसलमान बनने के लिए मजबूर नहीं किया गया था। वह यह मान रहा है कि ये नेता और अन्य बहुत से लोग अभी भी कुफ्र पर कायम थे। सबसे बड़ी बात यह है कि जिस कुशलता के साथ उन्होंने (पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने) अपने नेतृत्व में मौजूद एकता को बनाए रखा और लगभग सभी लोगों को यह एहसास दिलाया कि उनके साथ न्याय किया जा रहा है, इस चीज ने इस्लामी समाज में सद्भाव, शांति और उत्साह की भावनाओं को बढ़ावा दिया जो अन्य जगहों पर मौजूद अशांति के विपरीत था। यह बात निश्चित रूप से बहुत से लोगों पर स्पष्ट हुई होगी और इसने उन्हें मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर आकर्षित किया होगा। इस सब में एक बात निश्चित रूप से प्रभावशाली है और वह है मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपने उद्देश्य, अपनी दूरदर्शिता और अपनी बुद्धिमत्ता पर विश्वास। जब उनका समुदाय अभी छोटा था और अपने सभी संसाधनों को दुश्मनों से बचने में लगा रहा था, तब उन्होंने एक एकीकृत अरब की अवधारणा को जन्म दिया था जो बाहरी दिशा में विस्तार करेगा और जिसमें मक्का के लोग अपने पुराने व्यापारिक भूमिका के साथ-साथ एक नई महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाएंगे। और अब लगभग सभी लोग, यहां तक कि सबसे बड़े विरोधी भी उनके सामने झुक चुके थे। पर्याप्त कठिनाइयों के बावजूद, अक्सर मुश्किल हालात में लेकिन लगभग हमेशा पूरे आत्मविश्वास के साथ वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। अगर हमें इन ऐतिहासिक घटनाओं की सच्चाई पर विश्वास नहीं होता तो शायद ही कोई यह मानता कि मक्का का एक साधारण समझा जाने वाला नबी अपने शहर में विजेता के रूप में वापस आ सकता है।

(Muhammad at Medina by W. Montgomery Watt, अध्याय 'The Winning of the Meccans', पृष्ठ 67-68, 70, अमीना सईद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कराची, 2006)

फिर एक और पश्चिमी विद्वान आर्थर गिलमैन का उल्लेख है। यह भी एक प्रसिद्ध पश्चिमी विद्वान था जिसका संबंध अमेरिका से था। मक्का की विजय का वर्णन करते हुए उसने अपनी पुस्तक 'द सारासीन्स' में पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सामान्य क्षमा, आदर्श चरित्र और सहिष्णुता को उदाहरणीय बताते हुए लिखा है कि जब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी ऊंट पर सवार हुए जिसने पहले भी कई अवसरों पर आपको एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाया था और आप शहर में प्रवेश कर रहे थे, तो आपका हृदय कृतज्ञता से भर गया क्योंकि आपने सड़कों को खाली देखा और समझ गए कि आपका स्वागत शांति से होगा। आपका यह कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है कि जिस अवसर पर मक्का के पूर्व निवासियों के अत्याचारों की याद आपको प्रतिशोध लेने के लिए उकसा सकती थी, वहां आपने अपनी सेना को किसी भी प्रकार के रक्तपात से रोका और विनम्रता व अल्लाह तआला के प्रति कृतज्ञता का पूर्ण रूप से प्रदर्शन किया। यह बात सही है, जैसा कि पहले हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का वाकया बयान हो चुका है। वह लिखता है कि यह सच है कि एक स्थान पर खालिद ने बल का मुकाबला बल से किया लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे सख्त नापसंद किया। यहां नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सबसे पहला काम काबा को मूर्तियों से पाक करना था और इसके बाद आपने अपने मुअज़्ज़िन को आदेश दिया कि काबा की ऊंचाई से नमाज़ के लिए आवाज़ बुलंद करे और एक घोषणा करने वाले को भेजा कि हर व्यक्ति अपने पास रखी मूर्तियों को तोड़ डाले। फिर वह लिखता है कि दस या बारह लोगों को जिन्होंने पहले विभिन्न अवसरों पर अत्यंत बर्बर व्यवहार किया था, सजा देने का आदेश हुआ और उनमें से चार लोगों को मृत्युदंड दिया गया, लेकिन इस रवैये को अन्य विजेताओं के रवैये की तुलना में हमें अत्यधिक मानवीय मानना चाहिए। वह लिखता है कि क्रूसेडर्स के अत्याचारों की तुलना में, जिन्होंने 1099 ईस्वी में सत्तर हजार मुस्लिम पुरुषों, महिलाओं और असहाय बच्चों को मौत के घाट उतार दिया था जब यरुशलम उनके कब्जे में आया, या अंग्रेजी सेना की कठोरता की तुलना में जो क्रॉस के साये में ही लड़े थे और जिन्होंने 1874 के यादगार वर्ष में युद्ध के दौरान अफ्रीका में गोल्ड कोस्ट (घाना का पुराना नाम) पर स्थित एक राजधानी को जला दिया था, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विजय वास्तव में धर्म की विजय थी न कि राजनीति की। आपने हर प्रकार की व्यक्तिगत सम्मान की बातों को अस्वीकार कर दिया और शाही वर्चस्व के सभी तरीकों से परहेज किया। जब मक्का के सभी अहंकारी नेता आपके सामने लाए गए तो आपने उनसे पूछा कि तुम आज मेरे हाथों से किस चीज की आशा रखते हो? उन्होंने कहा हे हमारे उदार भाई! दया की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा तो फिर ऐसा ही हो। जाओ, तुम सभी आजाद हो।

(The Saracenes by Arthur Gilman, Fourth Edition, T.Fisher Unwain, London, 1887, Pg.184,185)

फिर एक अन्य पश्चिमी विद्वान रूथ क्रैन्स्टन का उल्लेख है जिसका संबंध भी अमेरिका से था। मक्का की विजय का वर्णन करते हुए यह महिला अपनी पुस्तक 'वर्ल्ड फेथ' में लिखती है कि 630 ईस्वी के आरंभ में एक दिन वह व्यक्ति जिसे केवल दस वर्ष पूर्व इस शहर से पत्थर मारकर निकाल दिया गया था और जिसका मजाक उड़ाया गया था, अब अपने दस हजार अनुभवी सैनिकों के साथ मक्का शहर में प्रवेश कर रहा था। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया था कि किसी को न मारा जाए। शहरवासियों के साथ दया का व्यवहार किया जाए, लेकिन मक्कावासियों के सभी वादों और आश्वासनों के बावजूद उनके सैनिकों पर हमला किया गया और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने सेनापति खालिद, जो अब उनकी सेनाओं के कमांडर थे, को कड़ी जवाबी कार्रवाई से रोकने में कठिनाई हुई। हालांकि उसने इस बात में अतिशयोक्ति कर दी है। कोई आश्वासन नहीं थे। वहां पहले हमला मक्कावासियों ने किया था। वैसे भी पूर्वाग्रह कहीं न कहीं प्रकट हो ही जाता है। फिर वह लिखती है कि दो मुसलमान और अट्ठाईस मक्कावासी मारे गए। ऐसे समय और ऐसे अवसर पर यदि कोई अन्य नेता कमान में होता तो कल्पना कीजिए कितनी हिंसा होती। यहां फिर वह सच्चाई बताने के लिए मजबूर है। जब मुस्लिम सेना ने शहर पर नियंत्रण कर लिया तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना वस्त्र बदलकर सफेद इहराम पहन लिया। आपने हज के निर्धारित संस्कार पूरे किए। काबा का सात बार तवाफ किया। फिर आपने अपने बचे हुए साथियों को बुलाया। वे साथी जिन्होंने बार-बार अपनी जान जोखिम में डालकर आपके उद्देश्य के लिए बलिदान दिए थे, ताकि वे इस महान दिन और आपके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण अवसर पर आपके साथ खड़े हों। एक-एक करके तीन सौ साठ पत्थर की मूर्तियों को, हुबल सहित, काबा से निकाला गया और टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया। हर मूर्ति को तोड़ते हुए मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऊंची आवाज में फरमा रहे थे सत्य आ गया और असत्य मिट गया।

(World Faith By Ruth Cranston, page 216-217, Skeffington Stratford Place London 1953)

कैरेन आर्मस्ट्रांग भी एक अच्छी पश्चिमी विद्वान हैं और आमतौर पर बड़ी निष्पक्षता से लिखने वाली हैं। वह 1944 में पैदा हुई थीं। इंग्लैंड की एक प्रसिद्ध विदुषी और लेखिका हैं जो धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर अपने लेखन के कारण प्रसिद्धि भी रखती हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मुहम्मद: ए बायोग्राफी ऑफ द प्रोफेट' में मक्का की विजय के संदर्भ में लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खूनी बदला लेने की कोई इच्छा नहीं थी। किसी को इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर नहीं किया गया और न ही ऐसा लगता है कि किसी पर कोई दबाव डाला गया हो। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों को मजबूर करना नहीं चाहते थे बल्कि उनके बीच शांति और सुलह कायम करना चाहते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का इसलिए नहीं आए थे कि कुरैश को अत्याचार का शिकार बनाएं बल्कि इसलिए आए थे कि उस धर्म को समाप्त कर दें जो उनके लिए असफल सिद्ध हुआ था। मक्का की विजय के माध्यम से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पैगंबरी के अपने दावे की सच्चाई को सिद्ध कर दिया। यह विजय बिना किसी रक्तपात के प्राप्त हुई और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शांतिपूर्ण नीति सफल रही। कुछ ही वर्षों में मक्का में मूर्तिपूजा का अंत हो गया और इकरिमा व सुहैल जैसे कट्टर विरोधी ईमानदार व उत्साही मुसलमान बन गए।

(मुहम्मद: ए बायोग्राफी ऑफ द प्रोफेट बाय करेन आर्मस्ट्रांग, पेज 243 और 245, बुक रीडर्स इंटरनेशनल क्वेटा)

वैसे इन पश्चिमी विद्वानों में से कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने पूर्ण विरोधी होने के बावजूद सच्चाई को स्वीकार किया है और उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। वे कुछ और कर ही नहीं सकते थे।

मक्का की विजय के संबंध में कुछ और घटनाएं भी हैं। इनमें एक अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह की तौबा की घटना है। लिखा है कि उसने पहले इस्लाम कबूल किया था और वही लिखने वाला (कातिब-ए-वह्यी) भी था। फिर वह मुर्तद (धर्मत्यागी) होकर वापस चला गया। बयान किया जाता है कि उसे भी मृत्युदंड की सजा दी गई थी। जब मक्का फतह हो गया तो यह हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हु के यहाँ छिप गया। यह उनका दूध भाई था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उसे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने लाए और अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! अब्दुल्लाह की बै'अत कबूल फ़रमाइए।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काफी देर तक चुप्पी साधे रखी और फिर उसकी बै'अत ले ली। जब अब्दुल्लाह बिन अबी सरह वापस चला गया तो लिखने वाले रावी यहाँ लिखते हैं कि आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमाया: "मैं इसलिए कुछ देर तक चुप रहा कि तुम में से कोई उठे और उसे जल्दी से कत्ल कर दे।" सहाबा ने अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! आपने हमें इशारा क्यों नहीं कर दिया?" इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "नबी कत्ल के लिए इशारे नहीं किया करता।" कुछ रिवायतों में ये अल्फाज़ हैं कि "नबी के लिए जायज़ नहीं कि वह आँखों की ख़यानत (धोखे) का मुर्तकिब हो।"

(सीरत इब्ने इशाक, पृष्ठ 529-530, दारुल कुतुबिल इल्मिया बेरूत)(सीरत इब्ने हिशाम, पृष्ठ 742, दारुल कुतुबिल इल्मिया बेरूत)(अल-इक्तिफा, जिल्द 2, पृष्ठ 225, आलमुल कुतुब बेरूत)

हालांकि यह रिवायत और इसी तरह की मिलती-जुलती रिवायतें क्योंकि कुछ इतिहास की किताबों में मौजूद हैं इसलिए बयान भी कर रहा हूँ, लेकिन ये सब मश्कूक (संदिग्ध) हैं और जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अस्वा (आदर्श चरित्र) था और जो तहमुल (सहनशीलता) था वह साबित करता है कि ये सब रिवायतें बाद में गढ़ ली गई हैं।

वैसे हदीस की एक किताब सुनन नसाई में यह रिवायत इस तरह है कि फतह-ए-मक्का के मौके पर अब्दुल्लाह बिन सअद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर छिप गया। फिर जब आम बै'अत का एलान हुआ तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अब्दुल्लाह को लेकर आए और अर्ज़ किया कि अब्दुल्लाह की बै'अत कबूल फ़रमाइए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना सर मुबारक उठाया और उसकी तरफ

देखा और तीन मर्तबा ऐसा किया और इन्कार फ़रमा दिया और तीन मर्तबा ऐसा करने के बाद उसकी बै'अत ली और उसके बाद सहाबा की तरफ मुतवज्जह होकर फ़रमाया: "तुम में से कोई दाना आदमी न था कि जब मुझे देखा कि मैं बै'अत नहीं ले रहा तो उठकर उसे कत्ल कर देता।" सहाबा ने अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! हमें कैसे इल्म होता कि आपके दिल में क्या है? आपने अपनी आँख से हमें इशारा क्यों नहीं कर दिया?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "किसी नबी के शायं-ए-शान नहीं कि उसकी आँख ख़यानत करे।"

(नसाई, किताब तहरीमुद्दम, बाब अल-हुक्म फिल मुर्तद, हदीस 4067)

यह नसाई की रिवायत है लेकिन इसमें भी ज़रूरी नहीं कि इसे सही यक़ीन किया जाए।

यह रिवायत सुनन अबू दाऊद में भी है।

(सुनन अबू दाऊद, किताब अल-हुदूद, बाब अल-हुक्म फीमन इर्तद्दा, हदीस 4359)

हालांकि सुनन अबू दाऊद में इसके अलावा एक दूसरी रिवायत भी मौजूद है लेकिन इस रिवायत में कत्ल वगैरह का ज़िक्र नहीं है। चुनांचे इस रिवायत में बयान है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कातिब (लेखक) था। उसे शैतान ने बहका दिया। वह कुफ्फार से मिल गया। फतह-ए-मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके कत्ल का हुक्म दिया। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके लिए पनाह तलब की, इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे पनाह दे दी।

(सुनन अबू दाऊद, किताब अल-हुदूद, बाब अल-हुक्म फीमन इर्तद्दा, हदीस 4358)

यहाँ अब्दुल्लाह बिन सअद के मुताल्लिक इस तरह की रिवायतों के बारे में वाज़ेह होना चाहिए जैसा कि पहले भी मैंने कहा है कि यह रिवायत हदीस की जिन किताबों में आई है उसकी सनद के बारे में जरह (आलोचना) की गई है कि यह सनद के ए'तिबार से कमज़ोर है। यह कहना कि "इशारा क्यों नहीं किया?" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "मैं चुप रहा", जबकि आप बादशाह थे और वाज़ेह तौर पर कह सकते थे। वैसे दूसरी अहम बात यह काबिल-ए-गौर है कि इस्लाम में इरतिदाद (धर्म त्याग) की कोई सज़ा नहीं है। इसलिए अब्दुल्लाह बिन सअद के बारे में यह कहना कि वह मुर्तद हो गया था इसलिए उसके कत्ल की सज़ा सुनाई गई, यह दुरुस्त नहीं हो सकता।

और इसके अलावा यह भी काबिल-ए-गौर है कि इस वाकिये की जो तफ्सील बयान की गई है वह नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान के भी मुनाफिक नज़र आती है जैसा कि पहले मैं कह चुका हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो उस दिन अल्लाह तआला की सिफ़त गफ्फार और सित्तार और रहीम व करीम के मज़हर-ए-अतम नज़र आते थे। कोई शख्स ऐसा नहीं कि उसने माफी मांगी हो और आपने माफ न फ़रमाया हो, अगरचे उसके कत्ल का हुक्म ही क्यों न सदर किया गया हो। फिर यह हदीस बुखारी और मुस्लिम में भी मौजूद नहीं है। मज़ीद बरां यह रिवायत दिरायत (तर्क) के भी खिलाफ नज़र आती है क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक फातेह सरबराह की हैसियत भी रखते थे। अगर किसी के कत्ल का हुक्म ज़रूरी था तो किसी से डरने की ज़रूरत क्या थी? इशारे या किनाये की क्या ज़रूरत थी? जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अब्दुल्लाह को लेकर आए तो आप साफ फरमा देते कि नहीं, उसके जुर्म ऐसे हैं कि उसे माफ नहीं किया जा सकता। उन्हीं दिनों में बनू मखज़ूम की एक औरत की चोरी का मुकदमा भी तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में पेश किया गया था। उसकी सिफारिशें भी बहुत बड़ी-बड़ी करवाई गई थीं। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिफारिश की थी लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस तरह इन तमाम सिफारिशों को रद्द फरमाते हुए हाथ काटने की सज़ा बरकरार रखी। तो अगर अब्दुल्लाह बिन सअद का जुर्म इतना सख़्त था तो वाज़ेह फ़रमा दिया जाता कि उसकी माफी का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता लेकिन इसकी बजाय नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ ऐसा फे'ल मनसूब करना जो आम अख़लाकी आदाब और रिवायतों के भी मुनाफिक हो, वह नाकाबिल-ए-कबूल है। यानी जब वह बै'अत करने के लिए आ गया तो नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खामोश रहे।

कि इस दौरान कोई जल्दी से उसे मार डाले और जब सहाबा ने ऐसा नहीं किया तो आपने उनसे पूछताछ की कि क्यों नहीं मारा और जब सहाबा ने कहा कि आप आँख से इशारा कर देते तो यह फ़रमाया कि नबी की आँख धोखा नहीं देती। इसलिए आँख से इशारा नहीं किया। नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) इससे साबित होता है कि दिल में तो यही इच्छा थी। यह साबित करना चाहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में तो यही इच्छा थी कि काश कोई मार डाले लेकिन इशारा नहीं किया। इस रिवायत की बनावट ही इस वाकिये को रद्द करती है।

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान बहुत ऊँची और उत्कृष्ट है कि आपकी तरफ ऐसी बात मनसूब की जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदों के क़ायम करने के लिए चट्टान की तरह मज़बूत थे और किसी की कोई परवाह नहीं करते थे। हालाँकि माफी और रहमत के वक्त रेशम की तरह नरम और मुलायम थे। उन्हें किसी किस्म का कोई क्लेश और बेचैनी नहीं होती थी इसलिए अब्दुल्लाह बिन सअद की बै'अत के हवाले से इस तरह की रिवायतें माहे-नज़र हैं और कुछ मुअर्रिख़ीन और सीरत निगारों ने भी इनको मानने से इनकार किया है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल-मोमिनीन की आयत नंबर पंद्रह की तफसीर करते हुए इस वाकिये का तज़किरा यूँ करते हैं कि "इस आयत के साथ एक तारीखी वाकिया भी वाबस्ता है जिसका यहाँ बयान कर देना ज़रूरी मालूम होता है।" लिखते हैं कि "रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक कातिब-ए-वही था जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन अबी सरह था। आप पर जब कोई वह्यी नाज़िल होती तो उसे बुलवाकर लिखवा देते। एक दिन आप यही आयतें उसे लिखवा रहे थे। जब आप 'सुम्मा अन्शानाहू ख़ल्क़न आख़र' पर पहुँचे तो उसके मुँह से बे-इख़्तियार निकल गया 'फ़तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन'। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यही वह्यी है इसे लिख लो। इस बदबख़्त को यह ख़याल न आया कि पिछली आयतों के नतीजे में यह आयत तबई तौर पर आप ही बन जाती है। उसने समझा कि जिस तरह मेरे मुँह से यह आयत निकली और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे वह्यी क़रार दे दिया है उसी तरह आप नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) ख़ुद सारा क़ुरआन बना रहे हैं। चुनाँचे वह मुर्तद हो गया और मक्का चला गया। फतह-ए-मक्का के मौके पर जिन लोगों को कत्ल करने का रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था उनमें एक अब्दुल्लाह बिन अबी सरह भी था मगर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे पनाह दे दी और वह आपके घर में तीन दिन छिपा रहा। एक दिन जबकि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का के लोगों से बै'अत ले रहे थे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अब्दुल्लाह बिन अबी सरह को भी आपकी खिदमत में ले गए और उसकी बै'अत क़बूल करने की दरख़्वास्त की। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले तो कुछ देर तमल्ली फ़रमाया मगर फिर आपने उसकी बै'अत ले ली। और इस तरह दोबारा उसने इस्लाम क़बूल कर लिया।"

(तफसीर-ए-कबीर जिल्द 6 सफ़ा 139, एडिशन 2004)

अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के मुताल्लिक़ आता है कि यह बाद में नुमायाँ इस्लामी खिदमात सरअंजाम देने वाले सहाबा में शुमार हुए। मिस्र के गवर्नर भी रहे। अफ्रीक़ा के एक इलाक़े को फतह करने वाले थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद यह फितनों से अलग-थलग हो गए हालाँकि यह उनके रिजाई भाई थे और कहा जाता है कि उन्होंने दुआ की थी कि उनका आख़िरी अमल नमाज़ हो। चुनाँचे एक दिन सुबह की नमाज़ के लिए खड़े हुए और नमाज़ मुकम्मल करते हुए दाएँ तरफ सलाम कहा और बाएँ तरफ सलाम कहने ही लगे थे कि उनकी वफात हो गई। छत्तीस या सैंतीस हिजरी में उनकी वफात हुई।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3 सफ़ा 260-261, दारुल कुतुबिल इल्मिया बेरूत)

फिर इकरिमा बिन अबी जहल के क़बूल-ए-इस्लाम का ज़िक्र है। इकरिमा बिन अबू जहल उन लोगों में से था जिनके क़त्ल का नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फतह-ए-मक्का के मौके पर हुक्म दिया हुआ था। इकरिमा और उसका बाप नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ देता था और वह मुसलमानों पर बहुत ज़्यादा सख़्ती करता था। जब उसे इल्म हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसका खून बहाने का हुक्म दिया है तो वह यमन की तरफ भाग गया। बावजूद इसके कि इस्लाम दुश्मनी में उसने अपने बाप अबू जहल को भी पीछे छोड़ दिया था और मुमकिन है कि उसके क़त्ल का हुक्म दिया गया हो हालाँकि यह भी क़रीने-क़यास है कि मक्का के वह रईस और सरदार जो इस्लाम की मुख़ालफ़त में हमेशा पेश-पेश रहे थे और आए दिन इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम के ख़िलाफ़ मंसूबे बनाते रहते थे फतह-ए-मक्का के बाद उन्होंने ख़ुद ही यह सोच लिया हो कि उनके अमाल ऐसे हैं कि किसी सूरत में उनकी माफ़ी मुमकिन नहीं हो सकती और हो न हो उनको क़त्ल ही किया जाएगा तो वह यह सोचकर ख़ुद वहाँ से भाग गए और दरअसल उन्हें नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हद से बढ़ी हुई रहमत और माफ़ी और दरगुज़र की तवक्को ही न थी और न ही अंदाज़ा था। इसलिए उन्होंने मुनासिब समझा कि जान बचाकर भाग जाना ही बेहतर है। लेकिन जैसे-जैसे उन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हद से बढ़े हुए अफ़वो दरगुज़र का पता चलता गया तो वह मक्का में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ वापस खिंचे चले आए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में पेश हुए। बहरहाल इकरिमा उन सरकर्दा मुख़ालिफ़ीन में से एक थे कि जिन्होंने फतह-ए-मक्का के मौके पर भी इस्लामी लश्कर की भरपूर मुज़ाहिमत की। अपने साथ एक जत्था इकट्ठा किया जिसमें मक्का के बहादुर नौजवान शामिल थे जिनमें सुहैल बिन अम्र, सफ़वान बिन उमैया वग़ैरह शामिल थे और तलवारें निकाल लीं कि हम मुसलमानों को मक्का में दाख़िल नहीं होने देंगे और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के दस्ते का डटकर मुक़ाबिला किया लेकिन अपने बीस से ज़्यादा जवानों के क़त्ल होइत्यादिने के बाद यह सब लोग वहाँ से भाग खड़े हुए और सुहैल और सफ़वान और अकरमा तीनों मक्का से ही भाग गए। तारीख़ी रिवायत के मुताबिक़ इकरिमा ने समंदरी रास्ते से यमन जाने का फैसला किया। उसकी बीवी उम्मे हकीम बिन्ते हारिस बिन हिशाम जो कुरैशी सरदार की बेटी थी उसने हिंद बिन्ते उत्बा और मक्का की दूसरी मोअज़्ज़ज़ औरतों के साथ फतह-ए-मक्का के मौके पर इकट्ठे बै'अत की थी। उसे जब अपने शौहर इकरिमा के क़त्ल के डर से यमन की तरफ फ़रार होने का इल्म हुआ तो यह नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुई कि इकरिमा को ख़ौफ़ है...

कि आप उसे मरवा देंगे, आप उसे अमन दे दें। चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "वह अमन में है"। वह अपने गुलाम को लेकर जद्दा की तरफ रवाना हुई और उसने इकरिमा को समंदर के किनारे पाया जब वह कश्ती पर सवार होने का इरादा कर रहा था। एक क़ौल के मुताबिक़ उसने इकरिमा को तब पाया जब वह कश्ती में सवार हो चुका था। उसने इकरिमा को यह कहते हुए रोका कि "ऐ मेरे चाचा के बेटे! मैं तुम्हारे पास उस इंसान की तरफ से आई हूँ जो लोगों में सबसे ज़्यादा जोड़ने वाला और लोगों में सबसे नेक और लोगों में सबसे ख़ैरख़ाह है। तू अपनी जान को हलाकत में मत डाल क्योंकि मैं तुम्हारे लिए अमन तलब कर चुकी हूँ।" इस पर वह अपनी बीवी के साथ आया और उसने इस्लाम क़बूल कर लिया और उसका इस्लाम बहुत ख़ूबसूरत रहा।

रिवायत में आता है कि जब अकरमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उसने अर्ज़ किया कि "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरी बीवी ने मुझे बताया है कि आपने मुझे अमन दिया है यानी कुफ़्र की हालत में ही मक्का में रहने की इजाज़त दी है। यह नहीं कि मुसलमान हो जाऊँ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "तूने सच कहा है। यक़ीनन तू अमन में है।" इस पर इकरिमा ने कहा कि "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और आप उसके बंदे और उसके रसूल हैं।" और उसने अपना सर शर्म से झुका लिया।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया "ऐ इकरिमा! आज तू मुझसे जो भी चीज़ माँगेगा अगर मैं उसकी ताक़त रखता हूँगा तो ज़रूर तुझे दूँगा।" इकरिमा ने अर्ज़ किया कि "मेरी हर उस अदावत के लिए बख़्शिश की दुआ कर दें जो मैंने आप से रवा रखी।" इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दुआ की कि "ऐ अल्लाह! इकरिमा की हर वह अदावत उसे बख़्श दे जो उसने मुझ से रवा रखी या हर वह बुरी बात बख़्श दे जो उसने की" और फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुशी से सरशार होके अपनी चादर उस पर डाल दी और फ़रमाया "ख़ुश आमदेद उस शख्स को जो ईमान लाने की हालत में और हिजरत करने की हालत में हमारे पास आया।"

(अस-सीरत अल-हलबिया जिल्द 3 सफ़ा 132, दारुल कुतुबिल इल्मिया बेरूत)(सुबुल अल-हुदा जिल्द 5 सफ़ा 227-228, दारुल कुतुबिल इल्मिया बेरूत)(फतहुल बारी जिल्द 8 सफ़ा 13, क़दीमी किताब खाना कराची)(असदुल ग़ाबा जिल्द 4 सफ़ा 67, दारुल कुतुबिल इल्मिया बेरूत)(फतह-ए-मक्का बाशमील 307, 327, 328, नफीस एकेडमी कराची)

इकरिमा के ईमान लाने से एक पेशगोई के पूरा होने का ज़िक्र भी मिलता है जिसका हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़िक्र किया है कि "इकरिमा के ईमान लाने से वह पेशगोई पूरी हुई जो सालहा साल पहले मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा से बयान फ़रमाई थी कि मैंने ख़्वाब में देखा है कि गोया मैं जन्नत में हूँ। वहाँ मैंने अंगूर का एक ख़ोशा देखा और लोगों से पूछा कि यह किसके लिए है? तो किसी जवाब देने वाले ने कहा अबू जहल के लिए। यह बात मुझे अजीब मालूम हुई और मैंने कहा जन्नत में तो सिवाए मोमिन के और कोई दाख़िल नहीं होता। फिर जन्नत में अबू जहल के लिए अंगूर कैसे मुहैया किए गए हैं? जब इकरिमा ईमान लाया तो आपने फ़रमाया वह ख़ोशा इकरिमा का था। ख़ुदा ने बेटे की जगह बाप का नाम ज़ाहिर किया जैसा कि ख़्वाबों में अक्सर हो जाया करता है।"

(दीबाचा तफसीर अल-क़ुरआन, अनवारुल उलूम जिल्द 20 सफ़ा 350)

फिर हब्बार बिन अस्वद का भाग जाना और फिर इस्लाम क़बूल करना इस बारे में लिखा है कि जाहिलियत में यह बड़ा फसीहुल्लिसान था और लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ मुत्तहिद किया करता था। निज़ बड़ा बदख़ल्क़ शख्स था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने जब मदीना की तरफ हिजरत की तो उस वक्त वह हामिला थीं। हब्बार बिन अस्वद ने ऊँट को बदकाया जिससे आप ऊँट से नीचे गिर गईं। इसकी वजह से उनका हामिल साकित हो गया और इसी वजह से वह आख़िरी वक्त तक बीमार रहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके क़त्ल का हुक्म दिया था कि जहाँ भी नज़र आए उसे क़त्ल कर दिया जाए। फतह-ए-मक्का के वक्त यह उसी डर से मक्का से भाग गया और जंगलों में छिपता छिपाता रहा। फतह-ए-मक्का के बाद जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस मदीना तशरीफ़ ले गए तो फिर यह वहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ। जब यह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ तो सहाबा ने इसे देख लिया और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ करने लगे कि हब्बार आ रहा है। आपने फ़रमाया: "हाँ मैंने देख लिया है। इसको कुछ न कहा जाए।" हब्बार ने क़रीब आकर कहा "या रसूलुल्लाह! आप पर सलामती हो। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं। मैं आप से भाग कर तमाम इलाक़े में फिरा हूँ और मैंने अजमियों से भी मिलना चाहा। फिर मैंने आपके फज़्ल व करम और नेकी और दरगुज़र को याद किया जो आप ज़्यादती करने वालों से रवा रखते हैं। या रसूलुल्लाह! हम मुशरिक थे। अल्लाह ने आपके ज़रिए हमें हिदायत दी और हलाकत से बचाया। मेरी ज़्यादतियों और उन तकलीफों को माफ़ फरमा दीजिए जो मेरी तरफ से आप को पहुँचती रही हैं। मैं अपने बुरे सुलूक और गुनाहों का मुतरिफ़ हूँ।" रावी कहता है कि मैं उस वक्त रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखता रहा। आप हब्बार की माफ़ी पर हया के बाइस सर झुकाए बैठे रहे और फ़रमाया "मैंने तुझे माफ़ किया। इस्लाम माक़बिल के गुनाहों को माफ़ कर देता है।"

(किताब अल-मग़ाजी बिल वाक़िदी जिल्द 2 सफ़ा 282, दारुल कुतुबिल इल्मिया बेरूत)(फतह-ए-मक्का बिल मुहम्मद बाशमील सफ़ा 331 से 333, नफीस एकेडमी कराची)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस वाकिये को लिखा है कि उन लोगों में जिनके क़त्ल का हुक्म दिया गया था, वह शख़्स भी था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की हलाकत का मूजिब हुआ था। इस शख़्स का नाम हब्बार था। उसने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के ऊँट के तंग ज़ीन के कसने का जो चौड़ा तसमा होता है वह काट दिया था और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ऊँट से नीचे जा पड़ी थीं जिसकी वजह से उनका हामिल ज़ाए हो गया और कुछ अर्से के बाद वह फ़ौत हो गईं। इसके अलावा और जुर्मों के यह जुर्म भी उसे क़त्ल का मुस्तहक़ बनाता था। यह शख़्स भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और उसने कहा "ऐ अल्लाह के नबी! मैं आप से भाग कर ईरान की तरफ चला गया था। फिर मैंने ख़याल किया कि अल्लाह तआला ने अपने नबी के ज़रिए से हमारे शिर्क के ख़यालात को दूर किया है और हमें रूहानी हलाकत से बचाया है। मैं ग़ैर लोगों में जाने की बजाए क्यों न उसके पास जाऊँ और अपने गुनाहों का इक़रार करके उससे माफ़ी माँग लूँ।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा "हब्बार! जब ख़ुदा ने तुम्हारे दिल में इस्लाम की मुहब्बत पैदा कर दी है तो मैं तुम्हारे गुनाहों को क्यों न माफ़ कर दूँ। जाओ मैंने तुम्हें माफ़ किया। इस्लाम ने तुम्हारे सब पहले क़ुसूर मिटा दिए हैं।"

(दीबाचा तफसीर अल-क़ुरआन, अनवारुल उलूम जिल्द 20 सफ़ा 350-351)(फ़िरोज़ुल लुगात उर्दू सफ़ा 385, फ़िरोज़ संज़)

इसे तो बख़्श दिया लेकिन अब्दुल्लाह के बारे में कहा जाता है कि उसे नहीं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "क्यों न इशारा किया?" ज़रूरत नहीं थी बहरहाल।

फिर कअब बिन ज़ुहैर बिन अबी सुलमा हैं। यह भी एक शख़्स था। सात हिजरी में कब और उसका भाई बुजैर यह दोनों अब्रक़ मकाम पर आए जो बसरा से मदीना के रास्ते पर बनू असद का एक कुआँ था। बुजैर यहाँ से मदीना गया और वहाँ जाकर इस्लाम क़बूल कर लिया जिस पर कब बहुत नाराज़ हुआ और हज्विया (निंदा से भरे) अशआर लिखे। अगरचे आम रिवायतों से यही पता चलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन हज्विया अशआर की वजह से कब को क़त्ल करने का हुक्म दिया था मगर कुछ क़राइन से मालूम होता है कि अस्ल बात सिर्फ इतनी ही न थी बल्कि कब और बुजैर ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुँचाने या क़त्ल करने की कोई साज़िश की थी और इसी मक़सद के तहत कब मदीना से दूर ठहर गया और भाई को मदीना भेजा लेकिन बुजैर ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

जब कब को भाई के इस्लाम की ख़बर हुई तो वह सख़्त नाराज़ हुआ और इसके बाद जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताइफ़ से लौट रहे थे तो बुजैर ने अपने भाई कब बिन ज़ुहैर को ख़त लिखा कि वह भी तौबा करते हुए नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर होकर अपने क़ुसूर की माफ़ी माँग ले क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर उस शख़्स को माफ़ फरमा देते हैं जो तौबा करते हुए आपके पास हाज़िर हो जाता है। आख़िर कब को इसके सिवा कोई चारा न रहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हो जाए। चुनाँचे कब ने एक क़सीदा लिखा। इस क़सीदे का पहला मिसरा यह है :

"बानत सुआदु फ़क़ल्बी आल-यौम मत्बूलु"

(सुआद मुझसे जुदा हो गई और शिद्दत-ए-ग़म से मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो रहा है)

इसके बाद कब बिन ज़ुहैर रवाना हुए और मदीना पहुँचकर अपने एक जानने वाले के यहाँ ठहरे। अगले रोज़ वह शख़्स कब को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में लेकर आया। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उस शख़्स ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ इशारा करके कब से कहा कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। खड़े होकर आप से अमन तलब करो। वह खड़े हुए और आपके सामने बैठकर अपना हाथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में दे दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके पास मौजूद सहाबा में से किसी ने कब बिन ज़ुहैर को नहीं पहचाना। कब ने अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! कब बिन ज़ुहैर आपके पास अपनी जान की अमन पाने और तौबा करके मुसलमान होने के लिए आना चाहता है। अगर मैं उसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आऊँ तो क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी तौबा क़बूल फ़रमाएँगे?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "हाँ।" तब कब ने अर्ज़ किया कि "मैं ही कब बिन ज़ुहैर हूँ।" यह सुनते ही एक अंसारी मुसलमान खड़ा होकर कहने लगा: "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! इस ख़ुदा के दुश्मन को मेरे हवाले फरमाइए ताकि मैं इसकी गर्दन मार दूँ" मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "इसे जाने दो। यह शख़्स तौबा करने और नदामत के इज़हार के लिए आया है।" जब कब ने क़सीदा "बानत सुआद" पढ़ा और उसमें इस शेर पर पहुँचे:

"इन्न रसूला लनूरुन युस्तज़ाऊ बिही
मुहन्नदुन मिन सुयूफिल्लाहि मस्लूलु"

(यक़ीनन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ऐसा नूर हैं जिससे हक़ की रोशनी हासिल की जाती है और अल्लाह की तलवारों में से एक सोंती हुई बरहना हिंदी तलवार हैं)

तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी चादर हज़रत कब पर डाल दी जो उस वक्त आपके जिस्म मुबारक पर थी। इस चादर की वजह से ही यह क़सीदा, क़सीदा-ए-बर्दा के नाम से मशहूर हो गया यानी चादर वाला क़सीदा। बर्दा के मानी चादर के हैं। इसे क़सीदा "बानत सुआद" भी कहा जाता है और क़सीदा-ए-बर्दा भी। बाद में हज़रत अमीर मुआविया ने एक बड़ी रक़म के अवाज़ हज़रत कब से यह चादर ख़रीदने की कोशिश की मगर उन्होंने यह कहकर इन्कार कर दिया कि "मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस मुतबर्रिक कपड़े को जुदा नहीं करूँगा" मगर फिर जब हज़रत कब का इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत अमीर मुआविया ने कब के वारिसों से यह चादर ख़रीद ली। इसके बाद यह चादर बनू उमैया के हुक्मरानों को विरासत के तौर पर मुंतक़िल होती रही और उनकी हुकूमत के ज़वाल के वक्त ज़ाए हो गई।

कब बिन ज़ुहैर और क़सीदा-ए-बानत सुआद

(पृष्ठ 6-7, मकतबा इस्हाक़िया कराची)(अस-सीरत अल-हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 301-302, दारुल कुतुबिल इल्मिया बेरूत)(अल-लु'लु' अल-मक्नून सीरत एनसाइक्लोपीडिया जिल्द 9 पृष्ठ 393, दारुस्सलाम)(मुंतहा अल-सुअल अला वसाइल अल-वुसूल इला शमाइल अर-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिल्द 3 पृष्ठ 166, दारुल मिनहाज)(फरहंग-ए-सीरत पृष्ठ 24, ज़व्वार अकादमी कराची)

यह लिखा है कि आम लोगों में क़सीदा-ए-बर्दा के नाम से एक और क़सीदा भी ज़्यादा मशहूर है। वह इमाम शरफुद्दीन बुसीरी का क़सीदा है। इसे भी क़सीदा-ए-बर्दा इसलिए कहा जाता है कि जब उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में यह क़सीदा लिखा तो उन्हें ख़्वाब में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी चादर मुबारक ओढ़ाई जो उनकी बेदारी के वक्त भी उनके कंधे पर मौजूद थी। कहा जाता है कि इमाम बुसीरी मफ़्लूज (लकवाग्रस्त) थे और इस चादर की बरकत से शिफ़ा याब हो गए।

(दीवान-ए-इमाम बुसीरी पृष्ठ 32-33, दारुस्सलाम प्रिंटिंग प्रेस लाहौर)

बहरहाल यह एक कहानी है जो बयान की जाती है। ऐसी कहानियाँ भी आ जाती हैं। बहरहाल कुछ और शदीद मुख़ालेफ़ीन के क़बूल-ए-इस्लाम का भी ज़िक्र है और किस तरह उन्हें माफ़ी मिली, वह ज़िक्र भी आइंदा करूँगा।

अगले जुमा से इन-शा-अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा सालाना भी शुरू हो रहा है। इसके लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला अपने फज़्लों से जलसे को बरकत वाला फरमाए और हर प्रोग्राम को अपने फज़्लों से नवाज़ता रहे। अल्लाह तआला हर शरीर और नुक़सान पहुँचाने वाले और या किसी भी नुक़सान पहुँचाने की नीयत रखने वाले के शर से बचाए। जो मेहमान अंदरून मुल्क से आ रहे हैं या बिरून मुल्क से आ रहे हैं उन्हें खैरियत से अल्लाह तआला लाए और यहाँ उन्हें हर तरह से अपनी हिफ़ाज़त में रखे। लोगों के जो ज़ाती मेहमान जलसे के लिए आ रहे हैं या जमाअती इंतेज़ाम के तहत मेहमान नवाज़ी के शोबे के तहत उनका इंतेज़ाम होगा उनकी मेहमान नवाज़ी का हक़ अदा करने की अल्लाह तआला हर मेज़बान को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। कारकुनान जो बड़े शौक़ और जज़्बे से अपने आप को जलसे की ड्यूटियों के लिए पेश करते हैं अल्लाह तआला उन सब को बे-लौस होकर अपने अपने शोबे में खिदमत की तौफ़ीक़ दे और निहायत इज़्ज़त व एहतराम और नर्मी और ख़ुश मिज़ाजी से वह मेहमानों की खिदमत करें।

कुछ दफ़ा काम की ज़्यादती और नींद की कमी की वजह से कुछ कारकुनान की ख़ुश मिज़ाजी मुतास्सिर हो जाती है लेकिन हर कारकुन को जिसकी किसी भी शोबे में ड्यूटी है, यह सोच कर यह दिन गुज़ारने चाहिएँ कि हमें अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलात वस्सलाम के मेहमानों की खिदमत की तौफ़ीक़ दी है इसका मौक़ा दिया है। इसलिए इसके लिए हम हर कुर्बानी करते हुए अपने खिदमत के जज़्बे को क़ाएम रखेंगे और किसी किस्म की बदमिज़ाजी नहीं दिखाएँगे और हमेशा हमारे चेहरों पर मुस्कराहट रहेगी। नौजवान बचियाँ हैं या औरतें हैं या नौजवान लड़के हैं या बड़ी उम्र के मर्द हैं। अफ़सर हैं या मुआविन हैं। खाना पकाने और लंगर का इंतज़ाम चलाने वाले कारकुन हैं या खाना खिलाने वाले हैं। सिक्योरिटी वाले हैं या पार्किंग वाले हैं। सफ़ाई और हाइजीन के कारकुन हैं या अंदरूनी और बिरूनी डिस्प्लिन क़ाएम करने वाले हैं या गेट की एंट्री के ऊपर जो लोग मुतअय्यन हैं, बच्चों की मार्कीट में ड्यूटी देने वाली बचियाँ हैं या मेन जलसा गाह में ड्यूटी देने वाली लड़कियाँ और लड़के और मर्द हैं, औरतें हैं। सब को हमेशा अपने चेहरे पर मुस्कराहट के साथ अपने काम सरअंजाम देने चाहिएँ। अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ दे।

लेकिन साथ ही गहरी नज़र भी हर एक पर रखनी चाहिए ताकि किसी को भी कोई शर फैलाने की जुरअत पैदा न हो। अल्लाह तआला सब कारकुनान को अहसन रंग में खिदमत की तौफ़ीक़ दे और यह अल्लाह तआला के फज़्लों को हासिल करने वाले बनें।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 8 अगस्त 2025, पृष्ठ 2 से 6)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

श्री राना कमर मुबारक ने बताया कि यह हमारी पहली मुलाकात थी। हम छह वर्ष पहले पाकिस्तान से आए थे। टेक्सास की भूमि बहुत भाग्यशाली है जहाँ खुदा तआला के खलीफा के पावन चरण पड़े हैं। अहमदी समुदाय की बढ़ती प्रगति को देखकर मैं कह सकता हूँ कि एक दिन ऐसा आएगा जब लोग कहेंगे कि हम उस व्यक्ति को जानते हैं जो खलीफा से मिला था। अब तक हम MTA या अलफ़ज़ल में छपी रिपोर्ट्स में पढ़ते थे कि खलीफा से मिलने पर लोग कैसा अनुभव करते हैं। आज खुदा तआला ने हमें यह सौभाग्य दिया है। खलीफा से मिलने पर ऐसा लगता है मानो वे हमें बहुत पहले से जानते हों। वे बहुत प्यार से मिलते हैं और सभी चिंताएँ दूर हो जाती हैं

ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का दिव्य चेहरा देखकर हृदय स्वतः ही प्रार्थना करने लगता है

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के स्वागत के लिए वाशिंगटन की स्थानीय जमाअतों के अलावा दूर-दराज़ के क्षेत्रों से आए पुरुष और महिला सदस्य बड़ी संख्या में उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "तरबियती इश्यू जो भी आपके सामने आते हैं, जो भी जमाअत के बारे में खास तरबियती इश्यू हों, वह अपनी रिपोर्ट्स में जो मर्कज को भेजते हैं, उसमें अलग से जिक्र किया करे

27 अक्टूबर 2018, शनिवार
भाग दो। समापन

इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (खुदा तआला उनकी सहायता करे) मस्जिद बैतुस्समी में पहुँचे और ज़ोहर और अस्र की नमाज़ एक साथ पढ़ाई। नमाज़ पूरी करने के बाद वे अपने निवास स्थान पर लौट गए।

ह्यूस्टन समुदाय ने इस केंद्र और परिसर में एक सुंदर उद्यान भी बनाया है जहाँ विभिन्न प्रकार के फलदार वृक्ष और फूलों के पौधे लगे हैं।

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े चार बजे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास से बाहर आए और उद्यान में पहुँचकर एक पौधा लगाया।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कृषि सचिव परवेज हसन बाजवा से पूछा कि इस उद्यान में कौन-कौन से फलदार पौधे हैं। उन्होंने बताया कि यहाँ संतरे के पेड़ हैं, छोटे आकार के नारंगी के पेड़ भी हैं, नाशपाती भी है, जापानी फल भी लगा हुआ है, गन्ना भी लगाया गया है। इसके अलावा नारियल, पाम ट्री और खजूर के पेड़ भी लगे हुए हैं।

प्यारे हुज़ूर ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अंजीर भी लगाएँ। साथ ही कहा कि पूना गन्ना क्यों नहीं लगाते, वह भी लगाएँ।

प्यारे हुज़ूर ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कृषि सचिव से पूछा कि बीज आदि कहाँ उगाते हैं। उन्होंने बताया कि बीज आदि मैं अपने घर में उगाता हूँ। फिर पौधा यहाँ लगाता हूँ। खलीफा ने पूछा: अभी जो पौधा मैंने लगाया है, यह कौन-सा है? उन्होंने बताया कि यह एक फूल का पौधा है जो बाद में पेड़ बनता है और इस पर बड़े आकार के फूल लगते हैं। इस पर हज़ूर ने फरमाया कि फलदार पौधा लगाना चाहिए था।

इसके बाद प्यारे हुज़ूर ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ समय के लिए श्री नासिर हफीज मलिक के आग्रह पर उनके घर गए। अगस्त 2017 में ह्यूस्टन में एक समुद्री तूफान आया था जिससे उनके घर के अंदर काफी पानी भर गया था और वे लगभग आठ महीने किसी अन्य स्थान पर रहे। खलीफा ने उनसे पूछा कि घर इतना ऊँचा होने के बावजूद पानी अंदर कैसे आ गया। उन्होंने बताया कि तूफान बहुत भयंकर था। प्यारे हुज़ूर ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेहपूर्वक उनका घर देखा और घर के पिछले भाग में बने उद्यान को भी देखा जहाँ अनार, लोकाट, आड़ू, संतरा, ग्रेपफ्रूट और नींबू के पौधे लगे थे। लगभग आधे घंटे बाद प्यारे हुज़ूर ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ शाम पाँच बजकर चालीस मिनट पर वहाँ से वापस चले गए और छह बजे मस्जिद बैतुस्समी पहुँचे। वे अपने कार्यालय आए जहाँ कार्यक्रम के अनुसार परिवारों से मुलाकातें शुरू हुईं।

आज शाम के इस सत्र में 52 परिवारों के 236 सदस्यों ने अपने प्रिय नेता से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। ये परिवार ग्यारह अलग-अलग समुदायों से आए थे। कुछ सदस्य और परिवार बहुत लंबी यात्रा करके आए थे। सबसे लंबी यात्रा करने वाले ने ग्यारह सौ मील का सफर पंद्रह घंटे में तय किया था।

प्यारे हुज़ूर ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं को कलम भेंट की और छोटे बच्चों को स्नेहपूर्वक चॉकलेट दी। इन सभी सदस्यों और परिवारों ने अपने प्रिय नेता के साथ फोटोग्राफ खिंचवाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया।

मुलाकात करने वालों के अनुभव

श्री राना कमर मुबारक ने बताया कि यह हमारी पहली मुलाकात थी। हम छह वर्ष पहले पाकिस्तान से आए थे। टेक्सास की भूमि बहुत भाग्यशाली है जहाँ खुदा तआला के खलीफा के पावन चरण पड़े हैं। अहमदी समुदाय की बढ़ती प्रगति को देखकर मैं कह सकता हूँ कि एक दिन ऐसा आएगा जब लोग कहेंगे कि हम उस व्यक्ति को जानते हैं जो खलीफा से मिला था। अब तक हम MTA या अलफ़ज़ल में छपी रिपोर्ट्स में पढ़ते थे कि खलीफा से मिलने पर लोग कैसा अनुभव करते हैं। आज खुदा तआला ने हमें यह सौभाग्य दिया है। खलीफा से मिलने पर ऐसा लगता है मानो वे हमें बहुत पहले से जानते हों। वे बहुत प्यार से मिलते हैं और सभी चिंताएँ दूर हो जाती हैं।

श्री अज़हर बिलाल जट ने बताया कि पाँच वर्ष पहले अमेरिका आए थे। यह हमारी पहली मुलाकात थी। मुझे अभी भी ऐसा लग रहा है मानो मैं आकाश में उड़ रहा हूँ। खलीफा से मिलकर हृदय को अद्भुत शांति मिलती है। खुदा तआला यह सौभाग्य हमारे अन्य अहमदी भाइयों को भी प्रदान करे।

उनकी पत्नी ने कहा कि हम तो खलीफा को देखने के लिए कतार में खड़े रहते थे ताकि उनका एक क्षण दर्शन हो सके। टीवी पर तो कई बार देखा था लेकिन सामने देखने पर उनके चेहरे पर इतना तेज था कि हमारी आँखें स्वतः ही झुक गईं।

श्री अताउल्हादी, जो एक अफ्रीकी-अमेरिकी नव-अहमदी हैं और सेंट लुइस से हैं, ने बताया कि मैंने कुछ वर्ष पहले बैअत की थी और फिर मेरी पत्नी ने भी बैअत की। मेरी पत्नी की यह पहली मुलाकात थी। वह बहुत घबराई हुई थी लेकिन जब हम खलीफा के कार्यालय में पहुँचे तो उसकी सारी घबराहट शांति में बदल गई। मुझे लगा जैसे खलीफा के व्यक्तित्व से एक दिव्य प्रकाश निकल रहा है। आज मैं इस दिव्य प्रकाश की एक किरण को सेंट लुइस ले जा रहा हूँ।

श्री ज़ाबिर अहमद, जो अटलांटा से बारह घंटे की यात्रा करके आए थे, ने बताया कि ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का दिव्य चेहरा देखकर हृदय स्वतः ही प्रार्थना करने लगता है। ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस

अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेहपूर्वक गले भी लगाया।

वर्ष 2008 में बैअत करने वाले श्री माइकल बैंक्स और उनकी पत्नी की यह पहली मुलाकात थी। उन्होंने बताया कि मुलाकात से पहले हम दोनों बहुत घबराए हुए थे। मैं बोल नहीं पा रहा था। खलीफा की आध्यात्मिक व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली है। मैंने बताया कि मुझमें बहुत कमियाँ हैं तो उन्होंने कहा कि कोई भी पूर्ण नहीं होता, लेकिन हमें निरंतर प्रयास करके स्वयं को सुधारते रहना चाहिए। खुदा तआला का बहुत बड़ा अनुग्रह है कि उसने मुझे अहमदी बनने और खिलाफत का आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर दिया।

श्री खालिद अशफ़ाक़, जो छह माह पहले पाकिस्तान से आए थे, ने बताया कि लाहौर में अलफ़ज़ल वितरित करते समय मैं गिरफ्तार हुआ था और छह माह जेल में रहा। यह मेरी पहली मुलाकात थी जो मेरे जीवन का सबसे सुंदर पल था। खलीफा ने स्नेहपूर्वक गले लगाया और एक अंगूठी भी भेंट की।

श्री मलिक रिज़वान अहमद, जो थाईलैंड में बंदी रहे हैं, ने बताया कि पाकिस्तान में रहते हुए हम नहीं जानते थे कि कभी खलीफा के दर्शन होंगे। आज खुदा तआला ने हमारी पंद्रह वर्ष की इच्छा पूरी कर दी।

उनकी पत्नी ने बताया कि इस मुलाकात का वर्णन करना कठिन है। जैसे सूर्य को सीधे देखा नहीं जा सकता, वैसे ही खलीफा के तेजस्वी चेहरे को सीधे देख पाना संभव नहीं होता। खलीफा ने मेरे बेटे को कलम भी भेंट की।

यह मुलाकात कार्यक्रम रात आठ बजकर पैंतालीस मिनट तक चला। इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में पहुँचे जहाँ 'आमीन' समारोह आयोजित किया गया।

'आमीन' समारोह

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का दिव्य चेहरा देखकर हृदय स्वतः ही प्रार्थना करने लगता है(खुदा तआला उनकी सहायता करे) ने निम्नलिखित 31 बच्चों और बच्चियों से एक-एक आयत सुनी और अंत में प्रार्थना कराई:

बालक: फातिह अहमद नून, ताहिर लईक, तमसील मलिक, ईकान अहमद, जुहैब अहमद, साकिब महमूद खान, इयान अहमद इयाज, ज़ईम वहीद, राशिद करन, दानिश अज़ीज़ भट्टी, इयान अहमद नसीर।

बालिकाएँ: महरोश रहीम, महर रहीम, इयान मलिक, अरहम फारूक, हुदा खान, समीहा तारिक, हिबतुलहय्या मिश्कात, रोडियाल्लाह ओरेसन्या, युसरा बशरा शेख, सैय्यदा सबीका कामरान, ज़ोहा पाल, अज़्का मुबश्शिर, आइशा नवीद, मंतारा रेहान मूडा, ज़ैनब मरियम मलिक, आसिफ़ा मुर्तज़ा मलिक, खदीजा खान, साइरा बशरा भट्टी, आसिफ़ा बशरा खान, मारिया हुस्ना कौसर।

'आमीन' समारोह के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने मगरिब और इशा की नमाज़ एक साथ पढ़ाई। नमाज़ पूरी करने के बाद वे स्नेहवश लजना के हॉल और उनके बाज़ार में गए। महिलाओं ने खलीफा के अचानक आगमन पर खुशी से नारे लगाए और दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया। आज ह्यूस्टन में प्रवास का अंतिम दिन था।

इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर लौट आए।

28 अक्टूबर 2018, रविवार

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सुबह साढ़े छह बजे मस्जिद बैतुस्समी में पहुँचकर फज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद वे अपने निवास स्थान पर लौट गए।

सुबह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कार्यालयीन डाक, पत्र और रिपोर्ट्स देखीं तथा आवश्यक निर्देश दिए।

आज के कार्यक्रम के अनुसार ह्यूस्टन से वाशिंगटन के लिए प्रस्थान करना था।

ह्यूस्टन से वाशिंगटन प्रस्थान

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सुबह दस बजकर पैंतीस मिनट पर अपने निवास से बाहर आए। प्रस्थान से पहले निम्नलिखित विभिन्न समूहों के कार्यकर्ताओं ने खलीफा के साथ फोटोग्राफ खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया:

सुरक्षा समूह, ज़ियाफत के कार्यकर्ताओं की टीम, परिवहन विभाग के कार्यकर्ता। इस अवसर पर शेरिफ पुलिस के ड्यूटी पर तैनात अधिकारियों ने भी समूह फोटोग्राफ खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

पुरुष और महिला सदस्यों की एक बड़ी संख्या अपने प्रिय नेता को विदाई देने के लिए सुबह से ही मस्जिद बैतुस्समी के बाहरी परिसर में एकत्र थी। बच्चे और बच्चियाँ विदाई की प्रार्थनात्मक कविताएँ पढ़ रहे थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हाथ उठाकर सभी को 'अस्सलामु अलैकुम' कहा और सामूहिक प्रार्थना कराई। इसके बाद ह्यूस्टन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आगमन से पहले ही बोर्डिंग पास प्राप्त करने और सामान की बुकिंग की प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी।

ग्यारह बजे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हवाई अड्डे पर पहुँचे। यूनाइटेड एयरलाइंस के वरिष्ठ स्टाफ ने उनका स्वागत किया और एक विशेष प्रोटोकॉल व्यवस्था के तहत खलीफा को विशेष लाउंज में ले जाया गया।

ग्यारह बजकर पचास मिनट पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विमान में सवार हुए और बारह बजे यूनाइटेड एयरलाइंस की उड़ान UA 1192 ह्यूस्टन के 'जॉर्ज बुश इंटरकॉन्टिनेंटल' हवाई अड्डे से वाशिंगटन के डल्स हवाई अड्डे के लिए रवाना हुई।

लगभग दो घंटे पचास मिनट की उड़ान के बाद वाशिंगटन के स्थानीय समय के अनुसार तीन बजकर पचास मिनट पर विमान डल्स हवाई अड्डे पर उतरा। वाशिंगटन का समय ह्यूस्टन के समय से एक घंटा आगे है।

जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विमान से बाहर आए तो डॉ. नसीम रहमतुल्लाह, उप अमीर यू.एस.ए ने उनका स्वागत किया।

एक विशेष प्रोटोकॉल व्यवस्था के तहत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हवाई अड्डे से बाहर आए और मस्जिद बैतुर्रहमान के लिए रवाना हुए। लगभग पचास मिनट के सफर के बाद शाम पाँच बजकर बीस मिनट पर वे मस्जिद बैतुर्रहमान पहुँचे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के स्वागत के लिए वाशिंगटन की स्थानीय जमाअतों के अलावा दूर-दराज़ के क्षेत्रों से आए पुरुष और महिला सदस्य बड़ी संख्या में उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

डेट्रॉइट, लॉस एंजेलिस, शिकागो, मिलवॉकी, अटलांटा, डलास, कनेक्टिकट, सिएटल, सेंट लुइस, मियामी, बे पॉइंट, मिनेसोटा, हवाई, अर्कांसस, न्यूयॉर्क और रोचेस्टर से आए सदस्यों ने लंबी यात्रा करके यहाँ पहुँचे थे।

जैसे ही हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की गाड़ी मस्जिद बैतुर्रहमान के परिसर में प्रवेश की, सदस्यों ने उत्साह और जोश के साथ अपने प्रिय नेता का स्वागत किया। सदस्यों ने नारे लगाए। महिलाओं ने दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया। बच्चियाँ स्वागत गीत प्रस्तुत कर रही थीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ उनके पास से गुजरते हुए अपने निवास स्थान में पहुँचे।

इसके बाद शाम पाँच बजकर चालीस मिनट पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुर्रहमान में पहुँचकर ज़ोहर और अस्र की नमाज़ एक साथ पढ़ाई। नमाज़ के बाद वे अपने निवास स्थान पर लौट गए।

तत्पश्चात कार्यक्रम के अनुसार रात आठ बजे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुर्रहमान में पहुँचकर मगरिब और इशा की नमाज़ एक साथ पढ़ाई। नमाज़ पूरी करने के बाद वे अपने निवास कक्ष में लौट गए।

शेष आगे ..

29 अक्टूबर 2018, सोमवार

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (खुदा तआला उनकी सहायता करे) सुबह साढ़े छह बजे मस्जिद बैतुर्रहमान में पहुँचकर फज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद वे अपने निवास स्थान पर लौट गए।

सुबह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कार्यालयीन डाक, पत्र और रिपोर्ट्स देखीं तथा आवश्यक निर्देश दिए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में अमेरिका भर की विभिन्न जमाअतों से आने वाले पत्रों के अलावा दुनिया की अलग-अलग जमाअतों से फैक्स और ईमेल के जरिए पत्र और रिपोर्ट्स प्राप्त होते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रतिदिन इन पत्रों और रिपोर्ट्स को देखते हैं और आवश्यक मार्गदर्शन देते हैं।

कार्यक्रम के अनुसार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सवा ग्यारह बजे अपने कार्यालय पहुँचे और परिवारों से मुलाकातें शुरू हुईं।

आज सुबह के इस सत्र में 62 परिवारों के 294 सदस्यों ने अपने प्रिय नेता से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। 76 व्यक्तियों ने व्यक्तिगत रूप से मुलाकात का सौभाग्य पाया।

ये परिवार अमेरिका की 18 विभिन्न जमाअतों से आए थे। विशेष रूप से कैन्सस सिटी जमाअत से आने वाले सदस्यों ने 1095 मील का सफर 17 घंटे में तय करके यहाँ पहुँचे थे।

मुलाकात करने वाले सभी सदस्यों और परिवारों ने अपने नेता के साथ फोटोग्राफ खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं को कलम भेंट की और स्नेहपूर्वक छोटे बच्चों को चॉकलेट दी।

मुलाकात करने वालों के अनुभव

मुहम्मद गुराया साहब, जो एक शहीद अहमदी के परिवार से ताल्लुक रखते हैं, ने अपनी पहली मुलाकात का वर्णन करते हुए बताया: "मैंने नेपाल में 10 साल बिताए हैं और मेरे भाई पाकिस्तान में शहीद हुए थे। मैं 2014 में अमेरिका आया था और आज का दिन मेरे लिए सच्ची ईद का दिन था। मेरी खलीफा से मिलने की गहरी इच्छा थी जो आज पूरी हो गई। अलहम्दुलिल्लाह।"

एक सदस्य मुहम्मद मुस्तफा साहब ने बताया: "मैं खलीफा से मुलाकात के दौरान अपनी भावनाओं पर काबू न रख सका और जोर-जोर से रो पड़ा। मैं खलीफा से ज्यादा बात नहीं कर पाया। खलीफा का हमारे बीच उपस्थित होना हमारे लिए स्वयं को सुधारने का सबसे अच्छा अवसर है।"

ज़ुलक़र्नैन साहब, जो अपने परिवार के साथ हैरिसबर्ग से मुलाकात के लिए आए थे, ने कहा: "ऐसा लग रहा था मानो हम खुदा तआला के शेर के सामने खड़े हों। मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं थे। यह भी हमारे लिए आश्चर्य की बात थी कि खलीफा ने मेरे बच्चों की उम्र का बिल्कुल सही अनुमान लगाया।"

उम्मतुल मतीन साहिबा ने कहा: "शब्द मेरी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकते। मैं बहुत शांति महसूस कर रही हूँ। खलीफा मेरे दादा जान को जानते थे। उन्होंने कहा कि मेरे दादा के गन्ने के खेत थे। जब मैं उनके पास जाता था तो वे गन्ने का रस पिलाकर मेहमाननवाज़ी करते थे जो बहुत स्वादिष्ट होता था।"

बिलाल अहमद काहलून साहब, जो नेपाल से अमेरिका आए हैं, ने कहा: "मैंने नेपाल में दस साल शरणार्थी के रूप में बिताए। आज खलीफा से मेरी जीवन की पहली मुलाकात थी। शब्द मेरी स्थिति का वर्णन नहीं कर सकते। ये पल इतने सुंदर थे कि अब हमेशा मेरी यादों में जीवित रहेंगे।"

शाहिद अहमद डार साहब ने बताया: "मैंने पाकिस्तान से हिजरत के बाद नेपाल में ग्यारह साल बिताए हैं। खलीफा से मिलने की तड़प हर अहमदी मुसलमान के दिल में होती है। खुदा तआला का लाखों शुक्र है कि आज मेरी जीवन की सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई है।"

सफीर अहमद बाजवा साहब ने कहा: "आज जीवन में पहली बार खलीफ़तुल मसीह के दर्शन का सौभाग्य मिला। जब हम मुलाकात के लिए कार्यालय में दाखिल हुए तो खलीफा के चेहरे पर नज़र पड़ी तो उनका चेहरा दिव्य प्रकाश से भरा हुआ लगा। जब खलीफा ने मुझे हाथ मिलाने का सौभाग्य दिया तो मैंने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने नेता के पावन हाथ को तीन बार चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया।"

हैरिसबर्ग से आए ज़फरुल्लाह खान साहब ने बताया: "खलीफा से मुलाकात भले ही कुछ पलों की थी लेकिन हमारे जीवन के लिए हमेशा यादगार बन गई। मुलाकात में खलीफा ने मुझे एक सलाह भी दी। जब मैंने उन्हें अपनी नौकरी के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि ईमानदारी और मेहनत से अपना काम करो।"

मुनव्वर अहमद साहब, जिन्होंने अपने परिवार के साथ मुलाकात का सौभाग्य पाया, ने कहा: "आज खुदा तआला ने हमारी मनोकामना पूरी कर दी। खलीफा ने मुझे और मेरे परिवार को नियमित रूप से प्रार्थना के लिए पत्र लिखने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि प्रार्थना के लिए पत्र लिखते रहो, भले ही तुम्हें जवाब न मिले। इस तरह तुम्हारी जिम्मेदारी पूरी होगी और मेरी जिम्मेदारी शुरू होगी।"

मुलाकातों का यह कार्यक्रम दोपहर सवा दो बजे तक चला। इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुर्रहमान में पहुँचकर ज़ोहर और अस्र की नमाज़ एक साथ पढ़ाई। नमाज़ के बाद वे अपने निवास स्थान पर लौट गए।

अमेरिका के मुबल्लिगीन की खलीफा से मुलाकात

आज कार्यक्रम के अनुसार अमेरिका के मुबल्लिगीन की हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ बैठक हुई।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ शाम छह बजे मीटिंग रूम में पहुँचे। इस बैठक में 29 मुबल्लिगीन शामिल हुए।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रार्थना कराई। इसके बाद उन्होंने पूछा कि क्या मुबल्लिगीन की बैठक हर महीने होती है। मुबल्लिग इंचार्ज ने बताया कि हर महीने तो नहीं लेकिन दो महीने बाद होती है। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश देते हुए फ़रमाया: "मैंने हर महीने की बात कही है। दो महीने नहीं, हर महीने बैठक करें। जो मुबल्लिगीन पास हैं, दो-तीन सौ मील के दायरे में हैं, वे आ जाया करें। उन्हें बुला लिया करें और जो दूर हैं वे टेलीकॉन्फ्रेंस के जरिए बैठक में शामिल हों।"

साथ ही हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश दिया कि बैठक के स्थान को बदल-बदल कर आयोजित किया जाए। इस तरह हर इलाके के मुबल्लिगीन बैठक में शामिल हो सकेंगे और जो दूर के इलाकों के हैं वे कॉन्फ्रेंस कॉल के जरिए जुड़ जाया करेंगे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: "बैठक में मुबल्लिगीन ने हर महीने जो कार्य किए हैं, उन्हें आपस में साझा करें। सभी को पता चले कि तबलीग के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाए गए हैं और क्या परिणाम निकले हैं। कौन सा तरीका ज्यादा सफल रहा है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "लाभ वहीं हो रहा है जहाँ हर महीने बैठक होती है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कहा: "मैंने मुरब्बियों से कहा था कि सुबह तहज्जुद पढ़ने की आदत डालें। रिपोर्ट्स में लिख देते हैं कि तहज्जुद पढ़ी। अक्सर यह करते हैं कि नमाज़ से पहले उठे और दो नफ्ल पढ़ लिए। यह खानापूर्ति है, तहज्जुद नहीं है। कम से कम आधा-पौना घंटा पहले उठें। सर्दियों में तो और भी ज्यादा समय मिल जाता है। इस ओर ध्यान देना चाहिए।"

इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक-एक कर सभी मुबल्लिगीन से उनके केंद्रों में नमाज़ों की उपस्थिति का जायजा लिया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अगर मस्जिदों में नमाज़ों में उपस्थिति नहीं होनी तो मस्जिदें बनाने का क्या फायदा?" हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सभी मुबल्लिगीन को निर्देश दिया कि सबसे पहले जमाअती पदाधिकारियों को लाना शुरू कर दें तो कम से कम अंसार, खुद्दाम की मजलिस-ए-आमिला को शामिल करके पैंतालीस-पचास की उपस्थिति तो एक नमाज़ पर होनी चाहिए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "पदाधिकारियों का नमूना कायम होगा तो दूसरे लोगों में भी रुचि पैदा होगी।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश दिया कि जो सदस्य मस्जिदों के पास रहते हैं, उन्हें मस्जिदों में नमाज़ के लिए आना चाहिए।

एक मुबल्लिग से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पूछा: "क्या आप अपने क्षेत्र की जमाअतों में बताके जाते हैं या बिना बताए?" हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "कभी-कभी बिना बताए भी चले जाया करें। इस तरह सही जायजा भी मिल जाएगा। पता चल जाएगा कि नमाज़ों की उपस्थिति क्या होती है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक मुबल्लिग को निर्देश देते हुए कहा: "आपको अपनी हर जमाअत में साप्ताहिक जाने की कोशिश करनी चाहिए।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुबल्लिगीन को निर्देश देते हुए फ़रमाया: "नौजवानों को मस्जिदों से जोड़ें ताकि उन्हें इस्लाम की सही शिक्षा का पता चले।"

एक मुबल्लिग ने बताया कि वे मगरिब और इशा की नमाज़ें जमा करके पढ़ाते हैं। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश देते हुए फ़रमाया: "लोग यह न समझें कि नमाज़ें तीन होती हैं। आप मगरिब अपने समय पर अदा किया करें और जब लोग बाद में इशा के समय आएं तो उनसे कहें कि आप मगरिब की नमाज़ पढ़ लें। फिर आप इशा की नमाज़ पढ़ाएं ताकि लोगों को पता चले कि मुबल्लिग अपने समय पर नमाज़ पढ़ चुका है और नमाज़ें पांच अपने-अपने समय पर होती हैं। जिन्होंने नहीं पढ़ी, उन्हें बता दें कि अलग से अपनी नमाज़ पढ़ लें। फिर इसके बाद अस्र हो या इशा की नमाज़ हो, यह इसलिए जरूरी है कि नौजवान बच्चों को एहसास हो कि नमाज़ें पांच हैं, तीन नहीं हैं। अगर बच्चे, नौजवान तीन नमाज़ें समझते हैं तो यह उनकी गलत तालीम हो रही है। बड़ों को कहें कि तुम अपने नमूने दिखाओ।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अगर ज्यादा लोग इशा के लिए आ जाएं, जिन्होंने अभी मगरिब की नमाज़ अदा करनी है तो आप उनमें से एक इमाम मुकर्रर करके उनसे कह दें कि वे किसी दूसरी जगह एक तरफ खड़े होकर बाजमाअत नमाज़ अदा कर लें। क्या पता इसी तरह थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हो।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "लोगों को खुतबात के साथ MTA से जोड़ें। पदाधिकारियों के पीछे पड़कर उन्हें भी MTA और खुतबात से जोड़ें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जो सदस्य और पदाधिकारी मस्जिद के पास रहते हैं, मस्जिद से बहुत ज्यादा दूर नहीं है, उनसे कहें कि सुबह अपने कामों पर जाते हुए नमाज़-ए-फज्र पढ़कर जाया करें। घरों से काम पर निकलते हैं तो नमाज़-ए-फज्र मस्जिद में बाजमाअत पढ़कर जाया करें। सर्दियों में तो यह संभव है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश दिया कि जहां-जहां नमाज़ सेंटर बनाए हुए हैं, वहां किसी को बाकायदा इमाम मुकर्रर करना चाहिए। वहां आने वाले लोगों को पता हो कि फलां व्यक्ति इमाम मुकर्रर है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जहां-जहां लोग मस्जिद से दूर रहते हैं, उन्हें नमाज़ सेंटर बनाकर किसी एक घर में या किसी एक जगह इकट्ठा कर लें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश देते हुए फ़रमाया: "आपने घरों में जो भी नमाज़ सेंटर बनाए हैं, वहां हफ्ते में सात दिन

पांच वक्त नमाज़ होनी चाहिए और कम से कम सात दिन मगरिब और इशा की नमाज़ बाजमाअत पढ़ी जाए।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "यहां MTA देखने का रिवाज कम है। मैंने कहा था कि घरों में MTA पर जुमा का ख़ुत्बा जरूर TV पर लगाया करें। घरों में चलते-फिरते कानों में आवाज पड़ जाती है। इस ओर ध्यान दिलाने की जरूरत है। कानों में आवाज पड़ जाए तो उसका भी असर होता है। कम से कम एक घंटा रोजाना MTA देखने की कोशिश करनी चाहिए।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "लोगों को नमाज़ों से जोड़ें। MTA के जरिए खिलाफत से जोड़ें तो बहुत सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। इसी तरह बहुत सारी समस्याएं सामने भी आ जाएंगी।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुबल्लिग इंचार्ज साहब से तब्लीगी प्लान के बारे में पूछा। इस पर मुबल्लिग इंचार्ज ने बताया कि दाइयीन-ए-इलाल्लाह की संख्या बढ़ाने का प्लान है। इस संबंध में कोशिश कर रहे हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पूछा कि जमाअतें मुरब्बियों से मदद लेती हैं या आपने अपने प्रोग्राम बनाए हुए हैं? मुरब्बियों की सचिव तब्लीग और सचिव तरबियत से कोऑर्डिनेशन है? अतफाल आदि के प्रोग्रामों, क्लासों के लिए आपकी मदद ली जाती है? लजना के साथ कोई प्रोग्राम हुए हैं?

इस पर मुबल्लिगीन ने बताया कि लजना के साथ सवाल-जवाब के प्रोग्राम आयोजित हुए हैं। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि लजना के साथ जो भी प्रोग्राम है, वह पर्दे के पीछे रहकर करना है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "तरबियती इश्यू जो भी आपके सामने आते हैं, जो भी जमाअत के बारे में खास तरबियती इश्यू हों, वह अपनी रिपोर्ट्स में जो मर्कज को भेजते हैं, उसमें अलग से जिक्र किया करें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "मैंने जर्मनी से जायजा लिया था, इसका फायदा हो जाता है। यह जरूरी है। बहुत से मामले और मसाइल मेरे सामने आ गए थे। एक सवालनामा बनाकर उन्होंने जायजा लिया था। बिना किसी के नाम के बहुत से इश्यू सामने आए थे। इस जानकारी की वजह से मेरी जलसे की तीन तकरीरें हो गई थीं।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जो नाम नहीं बताना चाहता, न बताए, लेकिन जो कोई भी तरबियती इश्यू है, वह अपनी रिपोर्ट में लिखकर भेज दें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सदरान की तरफ से सहयोग के बारे में पूछा। एक मुबल्लिग ने बताया कि सदर की तरफ से सहयोग की कमी है। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "आपको यहां तरबियत के लिए लगाया गया है, तरबियत करना आपका काम है। आपने हिकमत के साथ समझाते रहना है। चिढ़ना नहीं है और न चिढ़कर जवाब देना है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "मुरब्बियों का सहयोग पदाधिकारियों के साथ होना चाहिए। पदाधिकारियों का मसला सहयोग के संदर्भ में हर जगह है। मैं पहले भी बता चुका हूं कि मुझे अब्दुल मलिक खान साहब मरहूम ने बताया था कि वह कराची में मुरब्बी थे और अब्दुल्ला खान साहब कराची के अमीर थे। हज़रत मसीह-ए-मौऊद (अ.स.) ने एक मौके पर कहा था कि जिस तरह मलिक खान साहब और अब्दुल्ला खान साहब आपस में सहयोग से काम करते हैं, उसी तरह बाकी मुरब्बी क्यों नहीं कर सकते।"

नमाज़ जमा करने के संदर्भ में एक मुरब्बी साहब ने बताया कि यहां किसी दोस्त ने कहा था कि लंदन में नमाज़ जमा होती है। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि दस महीने से ज्यादा तो हम पांच नमाज़ें अलग-अलग ही अदा करते हैं। करीब डेढ़ महीने का अर्सा गर्मियों में नमाज़-ए-मगरिब-ओ-इशा और सर्दियों में नमाज़-ए-ज़ोहर-ओ-अस्र जमा होती है क्योंकि इन दोनों नमाज़ों का दरमियानी फासला बहुत कम हो जाता है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश दिया कि जिस दोस्त ने यह बात की थी, उसे समझा देना था।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "तहरीक-ए-जदीद की क़वाइद की किताब में आप मुबल्लिगीन के फरायज़ और जिम्मेदारियों पर मुश्तमिल क़वाइद हैं। 23 प्वाइंट्स हैं, क्या यह सबने पढ़े हैं? आप सबको चाहिए कि अपने यह फरायज़ पढ़ें और उनके मुताबिक काम करें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अपनी ज़िंदगियों को इस्लामी तालीम के मुताबिक ढालें और सारी जमाअत को तब्लीग करने के लिए मुतहर्रिक करें। फिर तरबियत करना आपकी जिम्मेदारी है। सचिव तरबियत प्रोग्राम बनाता है, सचिव तब्लीग प्रोग्राम बनाता है, दाइयीन-ए-इलाल्लाह की तरबियत तो आपने करनी है, दीनी इल्म तो आपके पास है, उनके पास तो नहीं है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "सुबह उठो और तैयार हो और आठ, साढ़े आठ बजे तक तैयार होकर अपने दफ्तर आओ और काम करो, अपनी डाक देखो और फिर तब्लीग के लिए निकल जाओ। प्रोग्राम पहले से बना हो।" हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "तब्लीग के लिए अलग-अलग नए-नए तरीके निकालो। नई राहें तलाश करनी पड़ती हैं। जो मुबल्लिगीन ऐसा करते हैं, वह कामयाब होते हैं।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "मैंने घाना में देखा है कि जो काम करने वाले मुबल्लिगीन थे, वह तब्लीग के लिए कोई न कोई रास्ता निकाल लेते थे। सड़क के किनारे, रास्तों पर पैम्फलेट्स लेकर खड़े हो जाते थे। बांटते थे, इस तरह राब्ते होते थे।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "आज से सात-आठ साल पहले कहा था कि हर साल दस फीसदी आबादी तक जमाअत का तआर्रुफ पहुंचाएं। लेकिन अमेरिका में अब तक एक फीसदी भी जमाअत का तआर्रुफ नहीं हुआ होगा।"

"बिलबोर्ड लगा दिया या वॉक या अमन पर पैम्फलेट बांट दिया, इसका अगला कदम भी तो होना चाहिए।" हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "मोटिवेट करने के लिए मुरब्बियों ने ही काम करना है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "मुबल्लिग तब्लीगी कमेटी का मेंबर है। आपने जो पैम्फलेट तैयार करना है, उसके लिए पहले डिस्कस करें कि लोग किस चीज़ से मुतास्सिर होते हैं। जिस इलाके में बांटना है, वहां का जायजा लें और फिर इलाके की जरूरत के मुताबिक पैम्फलेट तैयार करें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अपने राब्ते बढ़ाएं, सोशल मीडिया के जरिए बहुत से अपने प्रोग्राम कर रहे हैं। तब्लीग कर रहे हैं। बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, सबको करना चाहिए।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पूछा कि क्या नौमुबईईन की तरबियत के संदर्भ में आपको जमाअत की तरफ से प्रोग्राम मिलता है। इस पर मुबल्लिगीन इंचार्ज ने बताया कि हमने हर एक को पांच ऐसे नौमुबईईन को क़रीब लाने का टारगेट दिया हुआ है जो दूर हो गए हैं।"

इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निर्देश देते हुए फ़रमाया: "जो दूर नहीं हुए हैं, उन्हें नज़दीक लाने के लिए निरंतर संपर्क बनाए रखें। उन्हें न छोड़ें।" हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "पाकिस्तानी अपनी मजलिसें लगा लेते हैं, इस तरह दूसरे दूर हो जाते हैं। यह तरीका गलत है। इस ओर ध्यान देना चाहिए।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुरब्बियों का काम है कि वे कुरआन करीम पढ़ाएं, क्लासें लिया करें और अगर आपका अपना तलफ्फ़ुज़ (उच्चारण) ठीक नहीं है तो ठीक करें और फिर दूसरों को सिखाएं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अब पाकिस्तान से भी ऑनलाइन क्लासेज शुरू हो चुकी हैं। लेकिन आपको भी बाकायदा कुरआन करीम की क्लासेज लेनी चाहिएं।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अपनी जमाअत की इस्लाही कमेटी में लोकल मिशनरी शामिल है। इस्लाही कमेटी का काम है कि मसले के सामने आने से पहले उसका हल तलाश किया जाए।"

एक मुबल्लिग की तरफ से यह बात पेश हुई कि एक लड़की ने शादी करने की इच्छा जताई लेकिन उसके माता-पिता पढ़ाई के लिए तलक़ीन कर रहे थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अगर ऐसा केस आपके सामने आए तो उसे इस कमेटी में हल करें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह-ए-मौऊद (अ.स.) ने फ़रमाया था: "अगर लड़कियों को तालीम दिलवाकर उनसे नौकरियां करवानी हैं, कमाई करवानी है और इस वजह से उनकी शादी जल्दी न हो तो मैं ऐसी तालीम के खिलाफ हूं।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जमाअत के मेम्बर्स को इकट्ठा करना आपका काम है। लोगों को पदाधिकारियों से शिकायतें होती हैं। पदाधिकारियों को भी समझाएं और लोगों को भी समझाएं कि आपने पदाधिकारियों की बैअत नहीं की हुई। हज़रत मसीह-ए-मौऊद (अ.स.) की बैअत की है। जिनके झगड़े-लड़ाइयां हैं, घरों में जाकर उन्हें समझाएं। लेकिन किसी भी घर से जब तक सुलह नहीं हो जाती, कुछ खाना-पीना नहीं है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "तरबियत के लिए एक ज़रिया वसीयत की तरफ ध्यान दिलाना भी है। इसके लिए सचिव वसाया की मदद करें। वसीयत में शामिल होने से लोगों की तरबियत और कुर्बानी का मिआर बेहतर होता है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "मुबल्लिगीन को चंदे बढ़ाने में, चंदों का मिआर बढ़ाने और बशरह चंदा अदा करने के संदर्भ में सचिवों की मदद करनी चाहिए। यह बुनियादी तरबियत का काम है और मुबल्लिगीन के फरायज़ में है कि लोग सही शरह के साथ चंदा अदा करने लग जाएं। सीधी

दखलंदाजी नहीं करनी लेकिन चंदे बढ़ाने में मदद करनी है।"

एक मुबल्लिग ने बताया कि अगर लाइव खुत्बा-ए-जुमा फज्र के वक्त नश्र हो रहा हो तो क्या किया जाए। अमेरिका में कुछ इलाके ऐसे हैं कि जब खुत्बा-ए-जुमा लाइव आ रहा होता है तो फज्र का वक्त होता है।

इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जो फज्र का वक्त है वह तो वही है और मुख़्तस वक्त है। इसलिए वक्त पर नमाज़-ए-फज्र अदा हो। खुत्बा आप बाद में सुनें या जो MTA ने दोबारा नश्र करने के लिए तीन घंटे का ट्रांसमिशन डिले रखा है, उस वक्त सुन लें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर जलसा का प्रोग्राम हो या कोई दूसरा ऐसा प्रोग्राम हो कि खलीफा-ए-वक्त का खिताब लाइव आ रहा हो तो आप अपने हालात के मुताबिक नमाज़-ए-ज़ोहर-ओ-अस्र या मगरिब-ओ-इशा जमा कर सकते हैं। खिताब सुनने से पहले या बाद में वक्त की मुनासिबत से जमा की जा सकती हैं। लेकिन नमाज़-ए-फज्र की मजबूरी है, उसका एक मुअय्यन वक्त है जिसमें ताखीर नहीं की जा सकती।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "फज्र की नमाज़ के संदर्भ में जिसने भी यह सवाल किया है, यह तो पूछने वाला सवाल ही नहीं। एक मुबल्लिग को पता होना चाहिए कि नमाज़ के अक़्वात क्या हैं।"

शादियों पर नामुनासिब हरकतें, नापसंदीदा बातें होने के संदर्भ में एक मुबल्लिग ने सवाल किया। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "आप खुतबात सुनते हैं, मैंने सब बताया हुआ है। अगर शादी पर कोई गैर-इस्लामी रस्में, बातें देखें तो तवज्जो दिलाएं और बंद करवाएं। इस्लामी रिवायत और तालीमात के मुताबिक शादियां होनी चाहिएं। तवज्जो दिलाने पर अगर फिर भी इस्लाह नहीं करते तो फिर उठकर आ जाया करें। वहां नहीं बैठना। अगर बैठे रहेंगे तो फिर आपको भी सज़ा होगी।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में अर्ज़ किया गया कि कुछ गैर-अहमदी अहबाब हमसे अपना निकाह पढ़वाना चाहते हैं ताकि उनका इस्लामी तर्ज़ पर भी निकाह हो जाए। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "यह जायजा ले लें कि क्या यहां निकाह ख्वां रजिस्टर्ड होते हैं। अगर आप रजिस्टर्ड हैं तो निकाह पढ़ा सकते हैं।" एक मुबल्लिग से कहा कि पहले पता करके बताएं कि आपकी स्टेट का क़ानून क्या है? जो भी क़ानून है उसके मुताबिक चलना है।

एक मुबल्लिग ने सवाल किया कि अगर कोई शादी की गरज़ से बैअत करे तो क्या किया जाए। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "दिलों का हाल तो सिर्फ अल्लाह तआला जानता है। उन्होंने शादी तो बहरहाल करनी है और इजाज़त के बगैर करेंगे तो इखराज हो जाएगा तो इस तरह कम से कम वह किसी बुराई से बच जाएंगे।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "हमारा एक निज़ाम है। अगर कोई लड़का बैअत करता है तो जमाअती क़वाइद की रू से उसे एक साल का अर्सा गुज़ारना पड़ता है और अगर एक साल के अर्से से पहले शादी करनी है और किसी वजह से जल्दी करनी है तो मैं इजाज़त दे देता हूं ताकि गंद से बचें। दूसरा यह कि शायद जमाअत के क़रीब आ जाएं। वरना जिसने शादी करनी है वह तो कोर्ट में जाकर भी कर लेती हैं तो फिर इखराज की सज़ा होती है। तो इन चीज़ों से बचाने के लिए मैं कम अर्से में भी इजाज़त दे देता हूं ताकि इस्लाह हो जाए। जिसने पीछे हटना है वह बदकिस्मत है, वह पीछे हट जाता है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "नौमुबईईन को जब बैअत किए हुए साल मुकम्मल हो जाए तो फिर अमीर मुल्क या सदर इजाज़त देता है। अगर साल से कम अर्सा है और शादी करनी है तो खलीफा-ए-वक्त से इजाज़त लेना ज़रूरी है।"

एक मुबल्लिग ने अर्ज़ किया कि हमारी मस्जिद में कुछ गैर-अहमदी बतौर मदद ज़कात लेने के लिए आते हैं तो क्या हम उन्हें ज़कात की रक़म में से कुछ दे सकते हैं?

इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "ज़कात की मद तो आपके इख्तियार में नहीं है। उसमें से आप ख़ुद तो नहीं दे सकते। आप उन्हें बता दें कि ज़कात वगैरह की रक़म तो हम दे नहीं सकते। हमारा इख्तियार नहीं है। आप अपने पास सदक़ात वगैरह और मुक़ामी फंड रखें, उसमें से बतौर मदद जो देना है, दे दिया करें।"

बैअत फॉर्म के संदर्भ में एक सवाल के जवाब में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अगर आपको तसल्ली नहीं है तो इसे अपने मर्कज़ भेज दें। साथ खत लगाकर कि इसे फिलहाल ज़ैर-ए-नज़र रखें और अभी पेंडिंग रखें।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यूरोप में जो एसाइलम सीकर्स बैअत करते हैं, हम उन्हें कह देते हैं कि बैअत क़बूल उस वक्त होगी जब केस पास हो जाएगा। उनसे हम चंदा भी नहीं लेते। उनका केस पेंडिंग रखते हैं।

एक मुबल्लिग ने अर्ज़ किया कि कुछ अफ़राद लॉटरी का काम करते हैं। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि लॉटरी मशीन जुआ है। जो यह काम करते हैं, पदाधिकारी नहीं बन सकते। अगर वह पदाधिकारी हैं तो बताएं। महज़ कारकुन के तौर पर काम लेने में कोई हरज नहीं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जो सूअर और शराब का काम करने वाले हैं, उनके बारे में हिदायत है कि उनसे चंदा नहीं लेना। इज़्तिरारी कैफियत उनके लिए है। जमाअत के लिए इज़्तिरारी कैफियत नहीं है। इसलिए जमाअत उनसे चंदा नहीं लेगी।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "कुछ लोग बतौर मुलाज़िम काम करते हैं तो वह दूसरा काम तलाश करें। ऐसे लोगों को दो-तीन महीने तो मोहलत दी जा सकती है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अगर शराब स्टोर में है और वहां काम करने वाले उसमें सीधे मुलतहिस नहीं हैं, मिसाल के तौर पर ग्रोसरी स्टोर में कैशियर है तो कोई हरज नहीं। लेकिन अगर वह सीधे अपने हाथ से बेचता है तो फिर वह मुलतहिस है और शामिल है। हां अगर वह ऐसे टिल (TILL) पर है कि वहां शराब फरोख्त नहीं होती तो फिर ठीक है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "बहरहाल जो मुलतहिस हैं, ऐसे लोगों से चंदा नहीं लेना, उन्हें कोई पद नहीं देना, कारकुन के तौर पर तो काम कर सकते हैं ताकि तआल्लुक़ क़ायम रहे। अगर कोई आम कारकुन के तौर पर काम कर रहा है तो ठीक है। ऐसा शख्स किसी शोबे की नुमाइंदगी नहीं कर सकता।"

एक मुबल्लिग ने अर्ज़ किया कि अगर हम मगरिब की नमाज़ ताखीर से पढ़ें और उसके बाद दर्स हो फिर उसके बाद इशा की नमाज़ हो ताकि जमाअती मेम्बर्स के लिए आसानी हो। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "आप (स.अ.व.) की सुन्नत यही थी कि पहले वक्त पर नमाज़ पढ़ी जाए। अगर नियत नेक है तो फिर ठीक है ताखीर के साथ दूसरे वक्त में पढ़ ली जाए। यह देखना ज़रूरी है कि इशा के वक्त में न चली जाए।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक सवाल पर मुखरज के बारे में हिदायत देते हुए कहा कि नमाज़ पढ़ने आता है तो ठीक है, बेशक आए। लेकिन उससे कोई जमाअती काम कारकुन के तौर पर भी नहीं लेना। हमने उसे अहमदियत से नहीं निकाला, बल्कि निज़ाम से निकाला है। निज़ाम में जो सिस्टम है उसमें उसे इनवॉल्व नहीं करना।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुरब्बी का काम है कि उसकी तरबियत करे। उसे समझाए ताकि वह निज़ाम-ए-जमाअत का हिस्सा बने। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जो भी सज़ायाफ्ता मुझे खत लिखता है, मैं उसे सीधे जवाब नहीं देता। जब तक निज़ाम-ए-जमाअत की तरफ से रिपोर्ट आ जाए और माफी हो जाए तो फिर ठीक है। जमाअती निज़ाम के वक़ार को भी क़ायम रखना है और उसकी इस्लाह भी करनी है।"

एक मुबल्लिग ने अर्ज़ किया कि एक जमाअत की तादाद बहुत ज्यादा है, मिसाल के तौर पर आठ सौ से ज्यादा है। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अगर तरबियती लिहाज़ से आपको दिक़्तें पेश आ रही हैं तो आप अमीर साहब को लिखें तो दो जमाअतें बना दें।"

आखिर में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "खुलासा यह है कि आप मुबल्लिगीन ने अपनी जमाअत के सामने रोल मॉडल बनना है, इबादतें हैं, नमाज़ें हैं, अखलाक़ हैं, बातचीत है, दीनी इल्म है, जनरल नॉलेज है, मुल्की लिहाज़ से भी मुआमलात का इल्म होना चाहिए। कुछ जगहों पर आप लोग जमाअत की नुमाइंदगी में जाते हैं तो मुल्की हालात का इल्म होना चाहिए।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जमाअत के हर मेम्बर में यह एहसास हो कि आप किसी की तरफदारी

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 21 August 2025 Issue No. 34

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

पृष्ठ 1 का शेष

रहा हो, या अपने हृदय में यह विश्वास रखता हो कि अल्लाह तआला उसे देख रहा है। फिर प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह फरायज़ और नवाफिल इस नियमितता से अदा करे कि उसकी रातें भी दिन बन जाएं। इसी प्रकार तहज्जुद की मुनाजात से अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करे। जब तक कोई व्यक्ति अपनी नमाज़ों की इस प्रकार रक्षा नहीं करता, तब तक उसका यह आशा करना कि वह अल्लाह तआला को प्रसन्न करेगा, एक भ्रम से अधिक कुछ नहीं है।"

"फिर फरमाता है - मनुष्य की आत्मिक उन्नति का सातवां दर्जा यह है कि अल्लाह तआला उन्हें ऐसी जन्नत का वारिस कर देता है जो सभी जन्नतों का संग्रह है अर्थात फिरदौस। फिरदौस के अरबी भाषा में अर्थ होते हैं - ऐसा बाग जो सभी प्रकार के बागों का समूह हो। अतः फिरदौस शब्द का प्रयोग करके इस ओर संकेत किया गया है कि जिस प्रकार ये लोग सभी उच्च कोटि के आत्मिक गुण अपने में संग्रहित रखते हैं, उसी प्रकार उन्हें वह स्थान भी प्राप्त होगा जो सभी उत्तम गुणों का संग्रह होगा। और 'हुम फीहा खालिदून' कहकर इस ओर संकेत फ़रमाया कि जिस प्रकार ये लोग अल्लाह तआला की इबादत की रक्षा किया करते थे, उसी प्रकार अल्लाह तआला भी इस बात की निगरानी रखेगा कि वे इन अनुग्रहों के सदैव वारिस रहें और कभी उन पर अवनति का क्षण न आए।" (तफसीर-ए-कबीर,जिल्द6,सफ़ा136-137,प्रकाशनकादियान2010)

130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमाअत की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाअती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★

करने वाले नहीं। जब खानदानों की आपस में रंजिशें देखें तो उन्हें समझाएं। लेकिन किसी के घर चाय की प्याली नहीं पीनी जब तक कि उनकी सुलह नहीं होती।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जो भी बातें मैंने की हैं, सबको उनके नोटिस लेने चाहिएं।" हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "आप सब यह भी आदत डालें कि जो खुत्बा-ए-जुमा सुनते हैं तो उसके भी साथ-साथ नोट्स लें और फिर बाद में उनके प्वाइंट्स बनाएं। हमारे वहां यूके में कुछ मुबल्लिगीन हैं जो खुत्बा के नोट्स लेते हैं और फिर पूरा हफ्ता वह नोट्स उनके दर्स देने में काम आ जाते हैं।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अलफ़ज़ल का मुताला किया करें। हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन लोगों को मुखातिब होते हुए फ़रमाया था जो अलफ़ज़ल नहीं पढ़ते कि मैं तो अलफ़ज़ल पढ़ता हूं। मेरे लिए तो किसी न किसी मज़मून में कोई बात नई होती है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "जिनको अलफ़ज़ल अख़बार नहीं आता, वह मिशनरी इंचार्ज को बताएं। ऑनलाइन तो आ जाता है।" हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "अलफ़ज़ल पढ़ने से आपकी उर्दू बेहतर होगी।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए कहा कि हज़रत अकदस मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़्सीर-उल-कुरआन को बाकायदा अपने मुताला में रखें। इसके अलावा कम से कम आधा घंटा रोज़ाना हज़रत अकदस मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम की कोई न कोई किताब ज़रूर मुताला करनी है।

यूएसए के मुबल्लिगीन की हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह मीटिंग आठ बजे खत्म हुई। इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ ले आए जहां प्रोग्राम के मुताबिक तकरीब-ए-आमीन का इनिकाद हुआ।

तकरीब-ए-आमीन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित बीस बच्चों और बच्चियों से कुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और आखिर में दुआ कराई:

बालक: आशिर अहमद, मुस्तफा क़व्वामुद्दीन, फहद मुबारिज़ भट्टी, जुनैद सिद्दीकी, मुस्तफा अहमद, शुऐब असलम चौधरी, असद चौधरी, मुतहर अहमद वाहला।

बालिकाएं: अतीक़ा मुआज़ मिर्ज़ा, आइज़ा महमूद, फातिमा ज़हरा, जाज़िबा मनशाद, लुबैना मंसूर अहमद, मिशाल वक़ार, रिज़वाना मिर्ज़ा, सबीका अहमद, सैय्यदा मिलाहत, नाइला उम्मतुलहय्या, फराह ईमान अहमद, अदीला उम्मतुलहय्या।

तकरीब-ए-आमीन के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-मगरिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ ले गए।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad